तापमान

अधिकतम-21°C

न्यूनतम-18°C

प्रयाग दर्पण

प्रयागराज से प्रकाशित व सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में प्रसारित

अयोध्या रामलला प्राण प्रतिष्ठा आयोजन संबंध में बैठक सम्पन्न

3

पीएम ऑफिस जा रहे कांग्रेसियों की पुलिस से झड़प

4

वर्ष : 09 अंक : 268 प्रयागराज, बुधवार 03 जनवरी 2024 www.prayagdarpanlive.com हिन्दी दैनिक पृष्ट : 4 मूल्य: 3 रूपये

विकास परियोजनाएं तमिलनाडु की प्रगति को मजबूत करेंगी, तिरुचिरापल्ली एयरपोर्ट के उद्घाटन समारोह में बोले पीएम मोदी

तिरुचिरापल्ली। पीएम मोदी मंगलवार को दो दिवसीय दक्षिण दौरे पर तिरुचिरापल्ली पहुंचे। प्रधानमंत्री ने तिरुचिरापल्ली एयरपोर्ट की नई टर्मिनल बिल्डिंग का उद्घाटन किया। पीएम मोदी ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि, मैं कामना करता हूं कि वर्ष 2024 सभी के लिए शांतिपूर्ण और समृद्ध हो। यह सौभाग्य की बात है कि 2024 में मेरा पहला सार्वजनिक कार्यक्रम तमिलनाडु में हो रहा है। आज लगभग 20,000 करोड़ रुपए की विकास परियोजनाएं तमिलनाडु की प्रगति को मजबूत करेंगी। मैं आपको इन परियोजनाओं के लिए बधाई देता हूं। प्रधानमंत्री ने कहा, भारत को तमिलनाडु की जीवंत संस्कृति और विरासत पर गर्व है। मेरे कई तमिल मित्र थे और मुझे उनसे तमिल संस्कृति के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं दुनिया में जहां भी जाता हूं खुद को रोक नहीं पाता। तमिलनाडु के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि पवित्र सेनगोल को नए संसद भवन में स्थापित किया गया था, जो तमिल विरासत ने देश को दिए गए सुशासन के मॉडल से प्रेरणा लेने का एक प्रयास है। प्रधानमंत्री ने कहा कि, 2023 के आखिरी कुछ हफ्ते तमिलनाडु के कई लोगों के लिए कठिन थे। भारी बारिश के कारण हमने अपने कई साथी नागरिकों को खो दिया। संपत्ति का भी काफी नुकसान हुआ है। केंद्र सरकार उनके साथ खड़ी है। तमिलनाडु के लोग इस समय संकट में हैं और राज्य सरकार को हर संभव सहायता प्रदान कर रहे हैं। इसके अलावा, कुछ दिन पहले हमने तिरू विजयकांत को खो दिया। वह न केवल सिनेमा की दुनिया में बल्कि राजनीति में भी एक कप्तान थे। उन्होंने फिल्मों में अपने काम से लोगों का दिल जीता। एक राजनेता के रूप में, उन्होंने हमेशा राष्ट्रीय हित को हर चीज से ऊपर रखा। मैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं...मुझे तमिलनाडु के एक और बेटे, डॉ एमएस स्वामीनाथन भी याद हैं। उन्होंने एक भूमिका निभाई थी हमारे देश के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका। हमने पिछले साल भी उन्हें खो दिया था। टर्मिनल बिल्डिंग के उद्घाटन समारोह के दौरान केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि, पीएम मोदी के नेतृत्व में, सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि हवाई अड्डे न केवल यात्रा का माध्यम बनें, बल्कि हवाई अड्डे विकास का केंद्र बनें। आज हवाई अड्डे रोजगार का केंद्र बने हैं। इस क्षेत्र में पीएम के नेतृत्व में पिछले 9.5 वर्षों में जो एक बदलाव हुआ है, वह यह है कि उन्होंने इस देश के प्रत्येक नागरिक के लिए नागरिक उड्डयन का लोकतंत्रीकरण किया है। हवाई चप्पल पहनने वाला भी हवाई जहाज में यात्रा कर रहा है। प्रधानमंत्री ने करीब 1,100 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विकसित, दो-स्तरीय नए अंतरराष्ट्रीय टर्मिनल भवन में सालाना 44 लाख से अधिक यात्रियों और व्यस्त समय के दौरान लगभग 3500 यात्रियों की सेवा करने की क्षमता है। नए टर्मिनल में यात्रियों के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं हैं। प्रधानमंत्री ने चेन्नई में कामराजार बंदरगाह के जनरल कार्गो बर्थ-2 (ऑटोमोबाइल निर्यात, आयात टर्मिनल-2 और कैपिटल ड्रेजिंग फेज-5) को राष्ट्र को समर्पित किया। उन्होंने 9,000 करोड़ रुपये से अधिक की पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस परियोजनाओं की आधारशिला भी रखी। प्रधानमंत्री कार्यालय ने पिछले दिनों एक बयान में कहा था कि पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस क्षेत्र की परियोजनाएं क्षेत्र में ऊर्जा की औद्योगिक, घरेलू और वाणिज्यिक आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में एक अहम कदम होगा।

तीसरी बार मोदी सरकार, अबकी बार 400 पार, लोकसभा चुनाव के लिए बीजेपी ने दिया नया नारा

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने लोकसभा चुनाव की तैयारियां शुरू कर दी हैं। बीजेपी ने लोकसभा चुनाव के लिए नया नारा दिया है। 'तीसरी बार मोदी सरकार, अबकी बार 400 पार'। बता दें कि साल 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने नारा दिया था 'अबकी बार मोदी सराकर'। ये नारा तत्कालीन लोकसभा चुनाव में इतना पॉपुलर हुआ था कि हर किसी की जुबान पर सिर्फमोदी सरकार, मोदी सरकार नाम था। इसी नारे के चलते भारतीय जनता पार्टी ने 2014 में अपने दम पर केंद्र में सरकार बनाई थी।दरअसल, अयोध्या में राम मंदिर में होने वाली रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर बीजेपी ने मंगलवार को एक मीटिंग की। इस बैठक में अहम निर्ण लिए गए। 22 जनवरी को दिवाली जैसा माहौल बनाया जाएगा और इसके लिए भाजपा कार्यकर्ताओं को निर्देश भी जारी किए गए हैं। इसके साथ ही कार्यकर्ताओं से यह भी कहा गया है कि वे 22 जनवरी को सभी लोगों को राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को दिखाएं। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा, व्यवस्था ऐसी होनी कि सभी लोग अच्छे से दर्शन कर सकें। किसी को असुविधा ना हो। बिना भेदभाव के दर्शन करवाना है। अयोध्या के लिए हर दिन 35 ट्रेनें चलाई जाएंगी। भाजपा अयोध्या में प्रतिदिन 50000 लोगों के रुकने की व्यवस्था करेगी।

प्रधानमंत्री मोदी तमिलनाडु, लक्षद्वीप, केरल के दो दिवसीय दौरे पर, जनता को देंगे सौगातें

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज से तमिलनाडु, लक्षद्वीप और केरल के दो दिवसीय दौरे पर रहेंगे। इस दौरान वह तमिलनाडु में 19,850 करोड़ रुपये से अधिक की अनेक विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, शिलान्यास और लोकार्पण करेंगे। तमिलनाडु में रेल, सड़क, तेल एवं गैस और शिपिंग क्षेत्रों से संबंधित अनेक परियोजनाएं राष्ट्र को समर्पित करेंगे। साथ ही तिरुचिरापल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर नए टर्मिनल भवन का उद्घाटन करेंगे। प्रधानमंत्रीसाथ आईजीसीएआर, कलपक्कम में तैयार स्वदेशी प्रमाणित फास्ट रिएक्टर फ्यूल रीप्रोसेसिंग प्लांट (डीएफआरपी) भी राष्ट्र को समर्पित करेंगे। वह भारतीदासन विश्वविद्यालय के 38वें दीक्षांत समारोह को भी संबोधित करेंगे। लक्षद्वीप में मोदी 1,150 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे । इनमें दूरसंचार, पेयजल, सौर ऊर्जा, स्वास्थ्य तथा अन्य क्षेत्रों से संबंधित विकास परियोजनाएँ शामिल हैं।आजादी के बाद पहली बार लक्षद्वीप को सबमरीन ऑप्टिक फाइबर केबल से जोड़ा जाएगा।

ट्रक ड्राइवर्स की हड़ताल से 3 दिन में 450 करोड़ का हो सकता है नुक्सान

नई दिल्ली। देश के कई राज्यों में ट्रक ड्राइवर्स की हड़ताल का असर इकोनॉमी पर भी देखा जा सकेगा। आंकड़ों के मुताबिक अकेले मुंबई से हर रोज करीब 150 करोड़ रुपए का कारोबार इन ड्राइवर्स की वजह से होता है। ऐसे में 3 दिन की हड़ताल से 450 करोड़ रुपए के नुक्सान की आशंका है। फल-सब्जी समेत खाने-पीने की तमाम चीजों की आवाजाही रुकने का असर महंगाई पर भी देखा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि ड्राइवर्स के लिए नए नियम से देश भर के ट्रक ड्राइवर्स ने चक्का जाम कर दिया है। नए नियम के मुताबिक अगर कोई गाड़ी से टकराता है और मौके से फरार हो जाता है तो 10 साल तक की सजा होगी। साथ ही भारी-भरकम जुर्माना भी भरना होगा। इस नियम के खिलाफट्रक ड्राइवर्स ने 3 दिन के हड़ताल की घोषणा कर दी है। ट्रक ड्राइवर्स की हड़ताल के चलते महंगाई बढ़ने का खतरा बढ़ गया है। अकेले मुंबई में रोजाना 1.20 लाख ट्रक और कंटेनर्स एम.एम.आर. रीजन में आते हैं। इस हड़ताल का असर महाराष्ट्र के अलावा मध्य प्रदेश, गुजरात, हिमाचल, उत्तर प्रदेश से लेकर बिहार समेत देश के कई हिस्सों में देखा जा रहा है। ट्रांसपोर्ट बॉडी के मुताबिक, इस हड़ताल की वजह से देश भर में महंगाई बढ़ने का खतरा बढ़ गया है। वहीं लोगों को पेट्रोल-डीजल की चिंता भी सताने लगी है। दरअसल ट्रांसपोर्ट में ट्रक एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिए फल-सब्जी से लेकर जरूरत के सभी सामान एक राज्य से दूसरे राज्य में पहुंचाए जाते हैं। अब ड्राइवर्स की हड़ताल की वजह से देश भर में चक्का जाम की स्थिति आ गई है। पैट्रोल पंप एसोसिएशन के मुताबिक 3-4 दिन की हड़ताल का असर पूरे देश में देखा जा सकता है। हालांकि दो-पहिया वाले वाहन मालिक 3-4 दिन का पैट्रोल स्टॉक कर सकते हैं लेकिन दिक्कत बड़े वाहनों और चार पहिए वालों को है, क्योंकि अगर हड़ताल ज्यादा लंबा खिंचती है तो हमारा स्टॉक खत्म हो जाएगा। जब पंप पर पैट्रोल-डीजल नहीं मिलेगा तो इसका असर हर तरफदेखा जाएगा। वहीं ट्रक ड्राइवर्स की हड़ताल की वजह से फल-सब्जी समेत खाने-पीने की सभी चीजों की सप्लाई रुक जाने का खतरा बढ़ जाएगा। इसके चलते महंगाई बढ़ने का खतरा बढ़ जाएगा।हिट एंड रन केस में नए कानून के तहत अगर कोई इंसान किसी की गाड़ी से टकराता है और गाड़ी मालिक मौके से भाग जाता है तो उसे भारी-भरकम जुर्माने के साथ सजा का प्रावधान रखा गया है। वहीं यदि गाड़ी से टकराने वाला व्यक्ति गलत तरीके से गाड़ी के सामने आ जाता है या गलत तरीके से रोड क्रॉस करता है तो ऐसे मामलों में ड्राइवर को राहत मिलेगी।

खबरें एक नजर में

मणिपुर में उग्रवादियों का हमला, पांच जवान घायल

इंफाल। मणिपुर के टेंग्नौपाल जिले के मोरेह में मंगलवार को संदिग्ध कुकी उग्रवादियों के हमले में पुलिस के चार जवान और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) का एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गए। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि सभी घायलों को इलाज के लिए हवाई मार्ग से इम्फाल ले जाया गया। एक जनवरी से कुकी आतंकवादी आरपीजी, मोर्टार और स्नाइपर्स का उपयोग करके सुरक्षा कर्मियों पर हमला कर रहे हैं। गौरतलब है कि पिछले साल अक्टूबर में मणिपुर पुलिस के एक उप-विभागीय पुलिस अधिकारी (एसडीपीओ) की कुकी उग्रवादियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी।

बेगूसराय जिले के घर में लगी आग, परिवार के चार लोग जिंदा जले

बेगूसराय। बिहार के बेगूसराय जिले के बछवाड़ा थाना क्षेत्र में सोमवार देर रात एक घर में आग लग जाने से एक ही परिवार के चार लोगों की जिंदा जलकर मौत हो गई।घटना के बाद से गांव में मातम पसरा है। मृतकों में पति, पत्नी और दो बच्चे शामिल हैं।पुलिस के मुताबिक बछवाड़ा थाना के अरवा गांव में पूरा परिवार ठंड की रात में फूस के घर में सो रहा था, तभी घर में आग लग गई। आग इतनी तेजी से फैली कि सो रहे परिवार को भागने का मौका नहीं मिला। ग्रामीणों ने आग पर काबू पाने की कोशिश की, लेकिन वे किसी को बचा नहीं पाए। घटना की सूचना पाकर पहुंची बछवाड़ा पुलिस ने शवों को अपने कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है। बछवाड़ा के थाना प्रभारी अजीत कुमार ने मंगलवार को बताया कि मृतकों की पहचान नीरज कुमार, उसकी पत्नी कविता और उनके बच्चे लव तथा कुश के रूप में की गई है। उन्होंने बताया कि प्रथम दृष्ट्या आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट हो सकता है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

ओडिशा में बस-ट्रक की भयानक टक्कर में तीन की मौत, 20 जख्मीय मुख्यमंत्री ने राहत राशि का किया ऐलान

कटक। ओडिशा के कटक जिले में एक बस और ट्रक की आमने सामने की टक्कर में मंगलवार को कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई और 20 लोग जख्मी हो गए। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने दुर्घटना में तीन लोगों की मौत पर दुख व्यक्त किया और मृतकों के निकटतम परिजनों को तीन-तीन लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की।पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि हादसा कटक चांदबाली रोड पर सुबह निश्चिंतकोइली ब्लॉक में कटारापाड़ा के पास सुबह करीब साढ़े सात बजे तब हुआ जब बस की टक्कर ट्रक से हो गई। बस में 60 सवारियां सवार थी। कटक के कलेक्टर एन सेठी ने कहा, ÷दोनों गाड़ियों के चालक और एक सवारी की हादसे में मौत हो गई। दो मृतक केंद्रपाड़ा जिले के हैं जबकि ट्रक चालक की पहचान नहीं हो सकी है। ट्रक राजस्थान का है। दमकल केंद्रों और पुलिस कर्मियों की टीम मौके पर पहुंचीं और क्षतिग्रस्त बस के अंदर फंसी सवारियों को बाहर निकाला। एक अधिकारी ने बताया कि घायल यात्रियों को निश्चिंतकोइली अस्पताल में भर्ती कराया गया, और गंभीर रूप से जख्मी हुए 11 लोगों को एससीबी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, कटक में स्थानांतरित कर दिया गया है। कलेक्टर ने कहा कि मामूली रूप से घायल हुए कई यात्रियों को निश्चिंतकोइली अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है, जबकि तीन लोग अब भी निगरानी में हैं। एक यात्री अर्चना बारिक ने कहा, घने कोहरे और कम दृश्यता के बावजूद, बस तेज गति से जा रही थी।

राजस्थानः कड़ाके की ठंड में मॉर्निंग वॉक पर निकले सीएम भजनलाल शर्मा, सिटी पार्क में लोगों से मिले

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मंगलवार को सुबह मानसरोवर इलाके के सिटी पार्क में सैर पर निकले और वहां घूम रहे लोगों से संवाद किया। राजस्थान में इन दिनों कड़ाके की सर्दी और कोहरे का दौर जारी है। एक प्रवक्ता ने बताया कि घने कोहरे के बीच शर्मा सुबह जयपुर के मानसरोवर स्थित सिटी पार्क में सैर पर निकले। उन्होंने इस दौरान लोगों से संवाद भी किया।

सिद्धारमैया ही हमारे राम, हम पूजा के लिए अयोध्या क्यों जाएं, कांग्रेस नेता का विवादित बयान

बेंगलुरु। कर्नाटक के पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता होलालकेरे अंजनेय ने विवादित बयान दिया है। उनका कहना है कि मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ही हमारे लिए भगवान राम हैं। उनकी इस टिप्पणी पर राजनीतिक भी गरमा गई है। बीजेपी ने पलटवार करते हुए उन्हें हिंदू देवी-देवताओं के बारे में सोच-समझकर बात करने की चेतावनी दी है। अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन समारोह में सिद्धारमैया को आमंत्रित नहीं किए जाने पर एक पत्रकार के सवाल का जवाब देते हुए कांग्रेसी नेता अंजनेय ने कहा, वह (सिद्धारमैया) खुद भगवान राम हैं। उन्हें अयोध्या जाकर राम की पूजा क्यों करनी चाहिए? सिद्दारमैया अपने पैतृक गांव सिद्दारमनाहुंडी स्थित मंदिर में भगवान राम की पूजा करेंगे। अयोध्या में तो भाजपा के भगवान राम हैं। उन्होंने अपने लोगों को भजन सुनाने के लिए आमंत्रित किया है। उन्हें ये सब करने दीजिए, हमारे राम तो हर जगह हैं। वह हमारे दिलों में हैं। कांग्रेस नेता ने कहा कि, हमारे राम तो हमारे दिलों में

रहते हैं। मेरा नाम अंजनेय (हनुमान को अंजनेय कहा जाता है, क्योंकि वह अंजना के पुत्र हैं) है, आप जानते होंगे उन्होंने क्या किया था? रामायण में भगवान राम के समर्पित साथी और सहयोगी के रूप में हनुमान का वर्णन है। उन्होंने कहा कि बीजेपी धर्मों के बीच फूट डालो और राज करो की नीति अपनाती है। उन्हें एक धर्म के खिलाफबयान देकर वोट पाने का भ्रम है। कांग्रेस नेता एच आंजनेय के बयान पर भाजपा नेता बासनगौड़ा पाटिल यतनाल ने कांग्रेस नेता को चेतावनी देते हुए कहा कि वह हिंदू देवी-देवताओं के बारे में सोच समझकर बोलें। उन्होंने कहा कि श्यह हमारा दुर्भाग्य है कि ऐसे बेवकूफहिंदू विरोधी लोग हमारे मंत्री हैं। बता दें कि, 30 दिसंब को सीएम सिद्धारमैया ने कहा था कि उन्हें अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम के लिए निमंत्रण नहीं मिला है। अगर निमंत्रण आता है, तो मैं इस पर विचार करूंगा।

केंद्र सरकार का बड़ा फैसला, पति की जगह अब पेंशन के लिए बच्चों को नामांकित कर सकती है महिला कर्मचारी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने मंगलवार को कहा कि महिला कर्मचारी वैवाहिक विवाद के मामले में पति के बजाय अपने बच्चे या बच्चों को पारिवारिक पेंशन के लिए नामांकित कर सकेंगी। केंद्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 2021 का नियम 50 सरकारी कर्मचारी या सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारी की मृत्यु के बाद पारिवारिक पेंशन देने की अनुमति देता है। यदि किसी मृत सरकारी कर्मचारी या पेंशनभोगी की जीवित पति या पत्नी हैं, तो पारिवारिक पेंशन सबसे पहले पति या पत्नी को दी जाती है। नियमों के अनुसार, मृत सरकारी कर्मचारी,पेंशनभोगी के जीवन साथी के पारिवारिक पेंशन के लिए अयोग्य हो जाने या उसकी मृत्यु हो जाने पर ही परिवार के अन्य सदस्य अपनी बारी पर पारिवारिक पेंशन के लिए पात्र बनते हैं। पेंशन और पेंशनभोगी कल्याण विभाग (डीओपीपीडब्ल्यू) ने अब नियमों में संशोधन किया है और एक महिला कर्मचारी को पारिवारिक पेंशन के लिए अपने पति के बजाय अपने बच्चे,बच्चों को नामांकित करने की अनुमति दी है। पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग (डीओपीपीडब्ल्यू) के सचिव वी श्रिनिवास ने कहा, '' उन सभी मामलों में जिनमें तलाक की याचिका दायर की गई है या घरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा अधिनियम के तहत याचिका दायर की गई है या भारतीय दंड संहिता के तहत दर्ज मामले शामिल हैं, यह संशोधन एक महिला सरकारी कर्मचारी को पारिवारिक पेंशन पति के बजाय उसके पात्र बच्चे को वितरित करने की अनुमति देता है। उन्होंने कहा कि यह संशोधन डीओपीपीडब्ल्यू ने प्राप्त अभ्यावेदनों को ध्यान में रखते हुए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के परामर्श से किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के 1989 बैच के राजस्थान कैडर के अधिकारी श्रिनिवास ने कहा, ''यह संशोधन प्रगतिशील प्रकृति का है और पारिवारिक पेंशन के मामलों में महिला कर्मचारियों को सशक्त बनाता है।

उत्तराखंड में भी नए हिट एंड रन काननू का हो रहा जमकर विरोध, पांच हजार से ज्यादा वाहनों के पहिए हुए जाम

देहरादून। केंद्र सरकार के नए हिट एंड रन काननू का उत्तराखंड में भी जमकर विरोध हो रहा है। यहाँ भी सभी बसों, ऑटो और विक्रम चलाने वाले चालक कल से सड़कों पर उतरे हुए हैं। ट्रांस्पोटरों की इस विरोध और हड़ताल के कारण आम जनता को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। गढ़वाल विक्रम टेंपो वेलफेयर एसोसिएशन की ओर से सर्वसम्मति से दो और तीन जनवरी को ऑटो और विक्रम संचालित न करने का फैसला लिया गया। ऑटो और विक्रम चालकों ने वाहनों का संचालन खुद नहीं किया और दूसरों को भी नहीं करने दिया। धर्मनगरी में ई- रिक्शा और ऑटो चालकों की हड़ताल के चलते वर्ष के पहले दिन गंगा स्नान और देव दर्शन करने पहुंचे श्रद्धालुओं को परेशानी हुई। सिडकुल की कंपनी से भी रात में गाड़ी लोड होने के बाद दूसरे राज्यों में जाने वाले वाहन जैसे ही सड़क पर निकले तो उन्हें भी आंदोलनकारी चालकों ने रोक दिया।

अब सत्ता में बैठे लोगों के लिए धर्मनिरपेक्षता की कोई कीमत नहीं रह गई है: सोनिया गांधी

तिरुवनंतपुरम। धर्मनिरपेक्षता को भारत के लोकतंत्र का मूलभूत स्तंभ बताते हुए कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने इस बात पर अफ्सोस जाहिर किया अब जो लोग सत्ता में बैठे हैं उनके लिए धर्मनिरपेक्ष शब्द की कोई कीमत नहीं रह गयी है, जिसके परिणामस्वरूप समाज में ध्रुवीकरण बढ़ रहा है। गांधी ने 'मनोरमा इयरबुक 2024 में हस्ताक्षरित लेख में लिखा, वे कहते हैं कि वे 'लोकतंत्र के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन साथ ही उन्होंने इसके सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए सुरक्षात्मक उपायों को भी कमजोर किया है। हमारे राष्ट्र को सद्भाव की ओर ले जाने वाली रेल की पटरियां क्षतिग्रस्त हो रही हैं और इसका परिणाम समाज में बढ़ते ध्रुवीकरण के रूप में देखा जा रहा है। लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं-एक ट्रैक पर दो रेल पटरियों की तरह, जो मौजूदा सरकार का एक आदर्श सामंजस्यपूर्ण समाज की ओर मार्गदर्शन करते हैं। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष ने कहा, हम सभी इन शब्दों से परिचित हैं, जिनसे हमारा सामना बहसों, भाषणों, नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों और संविधान की प्रस्तावना में होता है। यह जानने के बावजूद, इन अवधारणाओं के पीछे के गहरे अर्थ अक्सर अस्पष्ट होते हैं। इन शब्दावलियों की स्पष्ट समझ प्रत्येक नागरिक को भारत के इतिहास, वर्तमान चुनौतियों और भविष्य के रास्ते को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगी। गांधी ने कहा कि धर्मनिरपेक्षता की व्याख्या कई तरीकों से की जा सकती है, लेकिन भारत के लिए सबसे प्रासंगिक अर्थ वह है जो महात्मा गांधी ने अपने प्रसिद्ध शब्द 'सर्व धर्म सम भाव में निर्धारित किया था। यहां मलयाला मनोरमा द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में उन्हें उद्धृत करते हुए कहा गया, गांधी जी सभी धर्मों की आवश्यक एकता को महसूस करते थे। जवाहरलाल नेहरू इस बात के प्रति गहन रूप से सचेत थे कि भारत एक बहु-धार्मिक समाज है, इसलिए वे एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की स्थापना के लिए लगातार प्रयास करते रहे। उन्होंने यह भी कहा कि डॉ. बी.आर. आंबेडकर के नेतृत्व में भारत के संविधान निर्माताओं ने एक अद्वितीय धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र का निर्माण करते हुए इस विचार को विकसित किया और सरकार पर लागू किया।

भाजपा शासन में बेटियों का बुरा हाल

प्रतिष्ठित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में एक छात्रा के साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म के जिन तीन आरोपियों को पुलिस ने घटना के दो माह बाद धर दबोचा है, वे तीनों ही भारतीय जनता पार्टी की आईटी सेल के पदाधिकारी निकले। उन्होंने पहली नवम्बर की रात एक छात्रा के साथ बंदूक की नोक पर इस कृत्य को अंजाम दिया था। घटना में उनकी संलिप्तता पाये जाने के बाद भाजपा ने चाहे तीनों को पार्टी से निष्कासित कर दिया हो, तो भी यह साबित हो जाता है कि पार्टी के साथ काम करने वाले चाहे जितनी चरित्र और जीवन मूल्यों की बात करें, उनकी चाल, चेहरा और चरित्र एकदम विपरीत है। ये तीनों वाराणसी आईटी सेल के पदाधिकारी हैं जिनका काम पार्टी की नीतियों व कायक्रमों का प्रचार करना होता है। भाजपा के लोगों के जिस प्रकार से अलग-अलग अपराधों में हाथ पाये जा रहे हैं, उससे साफ है कि पार्टी ऐसे लोगों की शरणस्थली बन गई है। लंका पुलिस थाना अधिकारियों के मुताबिक जिन तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है, उनके नाम हैं- कुणाल पांडेय, आनंद उर्फ अभिषेक चौहान और सक्षम पटेल। कुमार आईटी सेल का संयोजक है तो सक्षम सह संयोजक। आनंद भी इन दोनों का सहयोगी बताया गया है। घटना की रात बीएचयू महिला छात्रावास की एक छात्रा रात को घूमने निकली तभी तीनों उसके मुंह को दबाकर एक कोने में ले गये। बंदूक दिखाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। उसका फेन भी उन्होंने छीन लिया और शिकायत करने पर उसे जान से मारने की धमकी दी थी। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर उनकी शिनाख्त हुई जो बुलेट पर सवार होकर आये थे। तीनों आरोपियों के सोशल मीडिया पर उनके फेटो जिन बड़े लोगों के साथ वायरल हो रहे हैं उनमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी आदि हैं। वाराणसी मोदी की लोकसभा सीट है। इस नाते देखना यह है कि क्या बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ का नारा देने वाले मोदी इस बाबत क्या करते हैं। ऐसे ही, कोर्ट के जरिये दोष सिद्धि के पूर्व बेहद तत्परता से आरोपियों के घरों, दुकानों यहां तक कि पूरी बस्तियों पर भी बुलडोजर चलाने वाले आदित्यनाथ इन पर वैसे ही कहर बरपाते हैं या नहीं, जैसे कि वे भाजपा विरोधियों पर बरपाते हैं। हालांकि सभी जानते हैं कि ऐसा कतई नहीं होगा क्योंकि इस देश में दो तरह के कानून चलते हैं- पहला भाजपा विरोधियों के लिये और दूसरा भाजपा समर्थकों के लिये। विरोधियों के खिलाफ आरोप लगना ही कार्रवाई के लिये काफी होता है जबकि समर्थकों के दोष साबित हो जाने के बाद भी उनके खिलाफ कोई कार्रवाई होनी तो दूर, उन्हें बचाये जाने की कोशिशें भी आखिरी दम तक होती हैं। हाथरस, उन्नाव से लेकर लखीमपुर खीरी तक के मामले बताते हैं कि बलात्कार हो या हत्याएं- भाजपायियों के लिये सब कुछ जायज है। प्रशासन भी उन्हें हाथ लगाने की जुर्रत नहीं करता। इस मामले में सम्भवतः आरोपियों के खिलाफ साक्ष्य बहुत ही मजबूत रहे होंगे इसलिये पुलिस को भी कार्रवाई करनी पड़ी होगी। अब देखना तो यह है कि क्या कोर्ट में इनके खिलाफ आरोप साबित हो सकेंगे या ये वैसे ही निकल आयेंगे जिस प्रकार से देश में हुए कुछ अन्य मामलों में आरोपी साफ बच निकले हैं। इस वारदात से कई प्रश्न भी खड़े होते हैं। पहली बात तो यह कि योगी बार-बार दावा करते रहे हैं कि उनके प्रदेश में कानून का इतना डर है कि कोई भी महिला गहनों से लदकर आधी रात को अकेली स्कूटी पर घूम सकती है। कोई असामाजिक तत्व उसकी ओर आंखें उठाकर भी नहीं देख सकता। योगी यह भी दावा करते हैं कि अपराधी उनके राज्य से निकल भागे हैं। बीएचयू परिसर तो वैसे भी सुरक्षित माना जाता रहा है क्योंकि उसमें कुलपति का सीधा नियंत्रण होता है। देश भर से बड़ी संख्या में आई लड़कियां यहां पढ़ती हैं। छात्रावासों में कुलपति, अधीक्षकों एवं प्रोक्टरों की बनाई सुरक्षा व्यवस्था में भरोसा कर वे अपना भविष्य बनाने में जुटी रहती हैं। वर्षों से यह व्यवस्था बनी हुई थी, परन्तु देखा यह गया है कि पिछले 8-9 सालों में बीएचयू समेत देश के ज्यादातर श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में सरकार की दखलंदाजी बढ़ी है। भाजपा एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से जुड़े कुलपति, कुलसचिव और प्रोफेसर-डीन के हाथों में पूरा प्रशासन आ गया है। साथ ही, इसी विचारधारा के छात्र इन परिसरों का वातावरण दूषित कर रहे हैं। उन्हें पूरा संरक्षण विवि प्रशासन से तो मिलता ही है, स्थानीय पुलिस भी मददगार होती है। पहले बाहरी तत्व परिसरों में मटरगश्ती करने की हिमाकत नहीं कर पाते थे। अब उनका न सिर्फ सीधा प्रवेश हो गया है वरन उन्हें मनमर्जी व्यवहार करने की भी आजादी है। इससे सिर्फ लड़कियां नहीं बल्कि भाजपा विरोधी विचारधारा का समर्थन करने वाले छात्र-छात्राएं भी असुरक्षित महसूस करने लगी हैं। पहले ये विश्वविद्यालय वैचारिक विभिन्नता और अलग-अलग विचारों की अभिव्यक्ति के केन्द्र माने जाते थे। अब ऐसा नहीं है। साथ ही, जिस विचारधारा के साथ ये आरोपी संलग्न हैं, वे मत विभिन्नता में विश्वास तो करते ही नहीं, महिलाओं के पढ़ने-लिखने, उनकी आजादी व सशक्तिकरण के भी खिलाफ हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े बताते हैं कि भाजपा शासित राज्य महिला उत्पीड़न एवं अपराधों के मामलों में काफी ऊपर हैं। इसका कारण यही है कि अपराधी देखते हैं कि किस प्रकार से पार्टी व सरकार अपने से जुड़े लोगों को बचाती है। इससे महिलाओं के साथ अत्याचार बढ़ते हैं तो यह स्वाभाविक है।

कम नहीं है समाज निर्माण में महिलाओं की भूमिका

निशा दानू

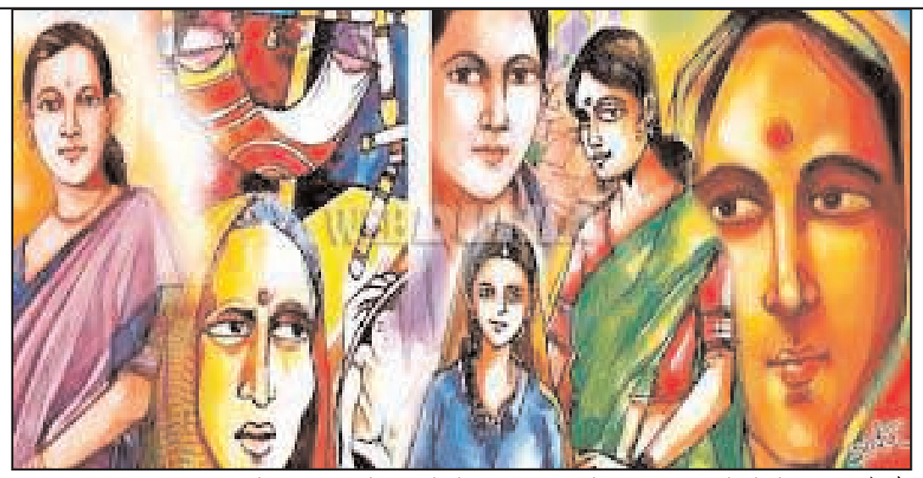

किशोरियों को भी उचित मंच दिया जाए तो वह बखूबी अपनी आवाज बुलंद कर सकती हैं। इसका उदाहरण शहरी क्षेत्र है जहां किशोरियां विकास के हर क्षेत्र में बराबर का योगदान दे रही हैं। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि ग्रामीण समाज किशोरियों के प्रति अपनी संकुचित मानसिकता से बाहर निकले और लड़कियों को भी पढ़ने-लिखने से लेकर अपने फैसले खुद करने की आजादी दे। वर्ष 2023 राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टिकोण से भारत के लिए ऐतिहासिक रहा है। धरती से लेकर अंतरिक्ष तक भारत ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। लगभग हर क्षेत्र में भारत पहले से बदल गया है। लेकिन अगर किसी चीज में बदलाव नहीं आया है, तो वह है महिलाओं और किशोरियों के प्रति समाज की सोच में बदलाव। भले ही 21वीं सदी का लगभग एक चौथाई हिस्सा गुजरने को है, लेकिन महिलाओं और किशोरियों के प्रति पुरुषसत्तात्मक समाज अपनी सोच को बदलने के लिए तैयार नहीं है। वह आज भी परंपरा और संस्कृति के नाम पर उन्हें चारदीवारी के पीछे खड़ा देखना चाहता है। भले ही शहरी क्षेत्रों में ऐसी सोच अब कम होने लगी है।लेकिन ग्रामीण भारत की सामाजिक स्थिति में ज्यादा बदलाव नहीं आया है। यहां समाज आज भी महिलाओं और किशोरियों के प्रति वही पुरानी सोच का हिमायती है जहां वह उन्हें सामाजिक बेड़ियों में ही बंधे देखना चाहता है। शहर से सटे ग्रामीण क्षेत्रों में जहां परिवर्तन आने लगा है लेकिन देश के दूरदराज ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक ताने-बाने में बहुत अधिक बदलाव नहीं आया है। इसकी एक मिसाल पहाड़ी राज्य उत्तराखंड का दूरदराज गांव जगथाना है। कपकोट ब्लॉक से करीब 30 किमी और जिला बागेश्वर से करीब 35 किमी दूर यह गांव सामाजिक और आर्थिक रूप से पीछे रहने के साथ-साथ वैचारिक रूप से भी पिछड़ा हुआ है। इस गांव में आज भी महिलाओं को अपनी मर्जी से जीने का अधिकार नहीं है। जहां लड़कों को वंश का उत्तराधिकारी तो लड़कियों को बोझ समझा जाता है। इन क्षेत्रों में महिला समानता से अधिक रूढ़िवादी धारणाएं हावी हैं। लड़कियों की तुलना में लड़कों को प्राथमिकता दी जाती है। उसके लिए शिक्षा के विशेष प्रयास किये जाते हैं, जबकि लड़कियों के सपनों को घर की चारदीवारियों तक सीमित कर दिया जाता है। उसे पढ़ाई करने के लिए भी स्कूल कम ही भेजा जाता है जबकि लड़कों की शिक्षा पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। हालांकि नई पीढ़ी की किशोरियां अब इस सोच पर सवाल उठाने लगी हैं। इस संबंध में गांव की एक 16 वर्षीय किशोरी पूजा प्रश्न करती है कि आखिर एक महिला को उसके अधिकारों से वंचित क्यों रखा जाता है? लड़कियों को पढ़ने और आगे बढ़ने से क्यों रोका जाता है? समाज उसे बोझ क्यों समझता है? जबकि समाज निर्माण में उसकी भूमिका पुरुषों से कहीं अधिक होती है? लड़के से वंश आगे बढ़ाने का सपना देखने वाला यही समाज भूल जाता है कि उस वंश की नींव एक औरत ही रखती है। इसके बावजूद समाज लड़कियों को बोझ समझता है और उसे कोख में ही मार देना चाहता है? सिर्फ इतना ही नहीं जाति, समुदाय और रंग के आधार पर भी लड़कियों के साथ भेदभाव किया जाता है। शिक्षा का मंदिर कहे जाने वाले स्कूल में लड़कियों को प्रोत्साहित करने की जगह उसका मनोबल तोड़ा जाता है। स्कूल के वार्षिक समारोह में मंच पर भाषण देने के लिए शिक्षक लड़कियों से अधिक लड़कों को प्राथमिकता देते हैं। उनकी संकुचित सोच होती है कि लड़कों की तुलना में लड़कियां बोल नहीं सकती हैं, अपनी बात नहीं रख सकती हैं। जबकि हकीकत इसके विपरीत होता है। यदि लड़कियों का उत्साहवर्धन किया जाए तो वह पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रख सकती हैं लेकिन घर से लेकर स्कूल और समाज तक उसके मनोबल को केवल लड़की होने के नाम पर तोड़ा जाता है। इस संबंध में गांव की एक 52 वर्षीय महिला महादेवी कहती हैं कि वह लड़कियों के आगे बढ़ने और उनके आत्मनिर्भर बनने की पक्षधर हैं, लेकिन किशोरियों के प्रति समाज की बेतुकी बातें उनका मनोबल तोड़ देती हैं और वह चाह कर भी अपनी बेटियों का हौसला बढ़ा नहीं पाती हैं। वहीं 40 वर्षीय रेवती देवी कहती हैं कि सरकार ने लड़कियों को आगे बढ़ने के लिए अवसरों का द्वार खोल दिया है, लेकिन ग्रामीण समाज की नकारात्मक सोच लड़कियों को आगे बढ़ने में बाधा बन जाती है। रेवती देवी की बातों का समर्थन करते हुए 42 वर्षीय शांति देवी कहती हैं कि ग्रामीण समाज को लगता है कि किशोरियों का पढ़-लिख कर आत्मनिर्भर बनना और सही-गलत के फैसले पर आवाज उठाना दरअसल उनका सर चढ़ना और मनमानी करना है जो समाज के हित में नहीं होगा। लेकिन यही काम यदि लड़के करें तो समाज को इस पर कोई आपत्ति नहीं होती है। वहीं एक अन्य महिला मालती देवी कहती हैं कि समाज किशोरियों को पढ़ाने में इसलिए भी ज्यादा रुचि नहीं रखता है क्योंकि शिक्षा पर खर्च करने के बाद भी उसके दहेज में पैसे खर्च होते हैं। ऐसे में वह लड़की को शिक्षित करने की जगह गृहस्थी के कामों को सीखने पर अधिक जोर देता है। वहीं 38 वर्षीय निर्मला देवी कहती हैं कि ग्रामीण समाज में लड़कियों को शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बनने का ख्वाब देखने की आजादी तो मिल सकती है, लेकिन उसे पूरा करने की छूट नहीं मिलती है। जागरूकता के अभाव में आज भी ग्रामीण समाज किशोरियों के प्रति संकुचित मानसिकता का ही पक्षधर होता है। वह कहती हैं कि यह किसी एक परिवार या जाति की सोच नहीं बल्कि जगथाना गांव के उच्च हो या निम्न समुदाय, किशोरियों और महिलाओं के प्रति सभी की सोच एक जैसी है। जिसे समाप्त करने की जरूरत है। ऐसा नहीं है कि पितृसत्तात्मक समाज में किशोरी शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच केवल पुरुषों की है, बल्कि जागरूकता के अभाव में कई महिलाएं भी लड़कियों की शिक्षा के प्रति उदासीन नजर आती है। गांव की 48 वर्षीय चंपा देवी कहती हैं कि आखिर लड़कियों को इतना पढ़ा-लिखा कर क्या करना है? एक दिन तो उन्हें पराया घर जाकर खाना ही पकाना है। ऐसे में अच्छा है कि हम उनकी शिक्षा पर खर्च करने से अधिक उनकी दहेज पर पैसा खर्च करें। वह जितना अधिक दहेज लेकर जाएंगी, ससुराल में उनका मान उतना ही बढ़ेगा। दरअसल चंपा देवी की यह सोच किशोरियों के प्रति समाज की नकारात्मक सोच को उजागर करता है। जिसे बदलने की जरूरत है। समाज को इस बात के लिए जागरूक करने की आवश्यकता है कि सभ्य समाज के निर्माण में लड़कियों की लड़कों के बराबर भूमिका है। इससे न केवल विकास में संतुलन पैदा होता है बल्कि यह महिला हिंसा को भी खत्म करता है। यदि किशोरियों को भी उचित मंच दिया जाए तो वह बखूबी अपनी आवाज बुलंद कर सकती हैं। इसका उदाहरण शहरी क्षेत्र है जहां किशोरियां विकास के हर क्षेत्र में बराबर का योगदान दे रही हैं।

नव् वर्ष का पृथ्वी के लिए नया संकल्प ,जल सरंक्षण एक मात्र विकल्प

संजीव ठाकुर

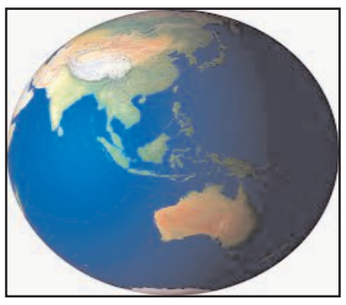

सामान्य तौर पर देखेंगे तो जल की उपलब्धता को लेकर कोई विशेष संकट नजर नहीं आता है। किंतु वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है पृथ्वी की सतह का लगभग 70: भाग जल से आच्छादित है पृथ्वी पर उपलब्ध समस्त जल का 97: समुद्र खारा पानी है, जो उपयोग के योग्य नहीं है सअतः मात्र 3: जल ही पीने के योग्य है,इससे भी कम जल नदी, तालाब, झीलों भूगर्भीय जल के रूप में मनुष्य व अन्य जीवों के पीने के योग्य मीठे पानी के रूप में उपलब्ध है, परिणामतः पीने योग्य जल का संकट और गहराता जा रहा है।यदि मानव सभ्यता के इतिहास को खंगाले तो यह तथ्य सामने आता है कि बड़ी-बड़ी सभ्यता एवं संस्कृतियाँ नदी, घाटियों में विकसित और फलित हुई है। जल अपने स्वरूप में निर्मलता धारण किए हुए पवित्रता का प्रतीक है, लेकिन इसकी क्रमिक रूप से घटती मात्रा में जल संकट अस्तित्व को खतरा उत्पन्न कर दिया है। जल अब राज्यों तथा विभिन्न देशों के मध्य बड़े विवाद का कारण बनता जा रहा है। जल मनुष्य के जीवन का अत्यंत आवश्यक स्वरूप है जल के बिना कल नहीं है और जल ही जीवन कहलाता है। ऐसे में जल का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। जल का विवाद सिर्फ गांव तहसील के जिलों में नहीं बल्कि राज्य और देशों के बीच भी गहराता जा रहा है। इसका बहुत बड़ा उदाहरण कावेरी, मांडवी जैसे अंतरराष्ट्रीय नदियों गंगा, ब्रह्मपुत्र में नील, सतलज जैसी अंतरराष्ट्रीय नदियां हैं। वैश्विक जल संकट से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप, अफ्रीकी देशों में एक बड़ी आबादी जला भाव के कारण काल कब रीत हो रही है। जल संकट की यह समस्या और अंतरराष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुकी है एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसकी मांग उठाई जा रही है। पृथ्वी पर पीने की योग्य जल की उपलब्धता घटती जा रही है वहीं विकास एवं औद्योगिकरण की प्रक्रिया में जल का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। मानव के जल दोहन का बेतरतीब उपयोग जल चक्र के संतुलन को नष्ट कर रहा है। प्रकृति में मानव के हस्तक्षेप के कारण ही ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई से ताजे जल के संकट को कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। शहरों में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता का स्तर निरंतर कम होते जा रहा है। इसका सबसे सर्वोत्तम उदाहरण दक्षिण अफ्रीकी शहर कैपटाउन एवं भारत के बंगलुरु शहरों में असीमित जनसंख्या के दबाव में लहराते जल संकट के कारण इन शहरों में यानी नो वाटर सप्लाई दिवस तक की नौबत आ गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकाशित जल विकास रिपोर्ट 2018 में पीने योग्य जल की घटती उपलब्धता एवं गहराता संकट को लेकर महायुद्ध की संभावनाओं का खुलासा किया है। जल संकट को लेकर अगले महा युद्ध की संभावनाओं को यदि टटोलने तो यह बात सत्य प्रतीत होती है जिसमें एक तरफ जलाभाव वाले देश का होगें तथा दूसरा पक्ष जलाधिक्य वाले देशों की होगी। जल के निरंतर गिरते स्तर को लेकर ऐसी विकराल स्थितियां उत्पन्न हो सकती है जिसके कारण मानवता तार-तार हो जाएगी और जल का उपयोग करने वाले जैविक जीवन का स्थिति समाप्त हो जाएगा। अतः यह उचित होगा कि समय रहते हम इस संकट को भाप लें एवं जल जैसे हम उन संसाधन के संरक्षण को लेकर युद्ध स्तर पर उचित कदम उठाएं। यूनाइटेड नेशंस वाटर अभियान के माध्यम से जल संकट से विश्व को अवगत करवाते हुए जल संकट के संबंध में आमजन को जागरूक करने का प्रयास कर रहा है। दूसरी तरफ प्रसिद्ध दवद-हवअमतदउमदजंस ऑर्गेनाइजेशन जल संकट से विश्व को अवगत कराते हुए जल संरक्षण के संबंध में सराहनीय प्रयास कर रहे हैं। आवश्यकता से अधिक जल प्रयोग करने से धरती का जलस्तर कृषकों की पहुंच से परे होता जा रहा है। वैश्वीकरण व उपभोक्तावादी संस्कृति से प्रेरित अंधाधुंध विकास की दौड़ में जल स्रोतों को प्रदूषित कर मानव समाज ने स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने का काम किया है। बढ़ती जनसंख्या भी वैश्विक जल संकट का एक बड़ा कारण है। यदि जनसंख्या की वृद्धि की रफ्तार से होती रही तो अगले दशक में वैश्विक जनसंख्या में वृद्धि की दर से 25: जनसंख्या को प्रयोग जितना ही पानी उपलब्ध हो पाएगा। यह भयानक जल संकट तथा वैश्विक खतरे की ओर इंगित करता है। वैश्विक स्तर पर जल विवाद लगातार होते रहते हैं मध्य एशिया में कैस्पियन सागर के जल बंटवारे संबंधी विवाद का समाधान तटवर्ती देशों द्वारा संधि के माध्यम से किया गया है। भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो स्थिति और भी जटिल होती जा रही है देश की जनसंख्या तो विश्व की जनसंख्या का लगभग 17.5: है, लेकिन ताजे जल की उपलब्धता 1: से भी कम है। राजस्थान में स्थिति जल संकट की बड़ी भयावह है वहां जल की उपलब्धता 1: से भी बहुत नीचे जल संकट वहां की नियति बन गई है। 2040 तक भारत के तीन चौथाई शहरों को जल संकट से जूझना होगा। अब हमारा दायित्व तथा कर्तव्य होगा कि समाज को जल संरक्षण के लिए प्रेरित करें एवं जल संरक्षण से संबंधित विधि तथा तकनीक से परिचित कराएं एवं उसका समुचित उपयोग करें।

आज का राशि फल

मेषः- आपकी महत्वाकांक्षाए सफ्लता की राह पर संघर्ष हेतु प्रेरित करेंगी। अच्छी भावनाऐं आपके मकसद सफ्लता दिलाऐंगी। कार्य क्षेत्र में अपनें बौद्धिक क्षमता का लाभ उठाऐंगे।

बृषभः- परिश्रम द्वारा आर्थिक क्षेत्र में सफ्लता अर्जित करेंगे। समय बड़ा मूल्यवान है। अतः इसे व्यर्थ न गंवायें। किसी नए सम्वेदना का प्रभाव नए रिश्ते को जन्म देगा। अभिभावकों का सहयोग प्राप्त होगा।

मिथुनः- परम्पराओ व संस्कारों के प्रति आस्था बढ़ेगी। निर्थक हीनभाव एवं कुछ साथ के प्रगतिशील व्यक्तियों से ईष्या भाव ठीक नही। अस्थिर मन लक्ष्य के प्रति केन्द्रित होने मे असमर्थ होगा।

कर्कः- किसी महत्वपूर्ण कार्य वश घर से दूर रहना अरुचिकर लगेगा। आपका मिलनसारिता के कारण सम्बन्धो का बिस्तार होगा। कमजोर मनोबल के कारण लक्ष्य के प्रति दृढ़ता का अभाव रहेगा।

सिंहः- किसी महत्वपूर्ण कार्य में थोड़ी कठिनाई का अभास होगा। संवेदनशील मन पूरानी मर्मस्पर्शी घटनाओं से ओत-प्रात होगा। परिवारिक दायित्वों को समयानुकूल पूर्ति हेतु मन चिन्तित होगा।

कन्याः- प्रयासरत क्षेत्रों में अवरोध तथा दाम्पत्य जीवन में कष्ट संभव। परन्तु ईरीय आस्था हर परीस्थिती पर बिजय प्राप्त करेंगे। धैर्यपूर्वक महत्वपूर्ण योजनाओं को क्रियान्वित करें।

तुलाः- घर-परिवार में खुशी का वातावरण रहेगा। पिछले दिनों उत्पन्न को व्यवसायिक अवरोध के हल ढूंढने में मन केद्रित होगा। किसी पुराने मित्र की मध्यस्तता से बिगड़े हुए सम्बन्धो में सुधार होगा।

वृश्चिकः- मनोवांछित सफ्लता न मिलने से उत्साह में कमी होगी। भौतिक चका-चौंद से प्रभावित मन अभाव की अनुभूति से दुखित होगा। धैर्यहीनता व परिवर्तनशीलता लक्ष्य से दिग्भ्रमित करेगा।

धनुः- परिजनो व मित्रों का सनिध्य से मन प्रसन्न रहेगा। कार्य-पेशे में कोई अवरोधित कार्य सार्थक होने के आसार है। मांगलिक एव सास्कृतिक आयोजनों में सम्मलित होंगे। महत्वपूर्ण कायरे में आलस्य ना करे।

मकरः- कुछ नये सम्बन्द बनेगें। जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद सम्भव। कर्तव्य व जिम्मेदारियों से घिरा मन अपनी कल्पनिक आकांक्षाओं से समझौता करने में सक्षम होगा। किसी नई दिशा में रुचि बढ़ेगी।

कुंभः- मन को खराब विचारो से दूर रखते हुए अच्छे कायरे में केन्द्रित करें। नई स्थितियाँ आप मे नई प्रतिभाओं का संचार करेगा। कार्यकुशलता व प्रतिभा का जौहर बिखेरेंगे।

मीनः- अपनी वाणी पर नियंतण्रखते हुए सम्बन्धों को मधुर बनाने की चेष्टा करें। प्रतिभा व आत्मबल कुछ महत्वपूर्ण सफ्लताओ के प्रति आशान्वित करेगा। आर्थिक लाभ के आसार हैं।

बाबरी ध्वंस से राममंदिरः भारतीय राजनीति की बदलती दशा और दिशा

राम पुनियानी

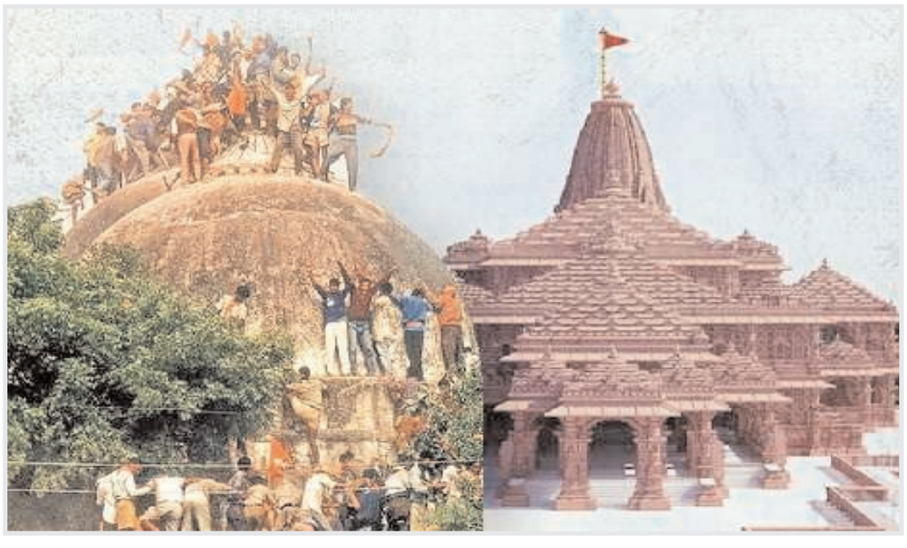

यह वह समय है जब हमें नेहरु के आधुनिक भारत के मंदिरों की संकल्पना और वैज्ञानिक समझ के विस्तार और विकास के प्रयासों को याद करना चाहिए। इस समय धार्मिकता और अंधश्रद्धा को जबरदस्त बढ़ावा दिया जा रहा है। जब हमनें औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों को तोड़ा था, तब हमने यह संकल्प लिया था कि अंतिम पंक्ति का अंतिम व्यक्ति हमारा फोकस होगा। परन्तु आज राजनीति अयोध्या के राममंदिर के आसपास घूम रही है। अधीन होने के बाद भारत ने जो दिशा और राह चुनी, उसकी रूपरेखा जवाहरलाल नेहरु के ट्रिस्ट विथ डेस्टिनी भाषण में थी। नेहरु ने कहा, भारत की सेवा का अर्थ है लाखों-लाख पीड़ितों की सेवा। भारत की सेवा का अर्थ है निर्धनता, अज्ञानता, रोग और अवसर की असमानता को समाप्त करना... हमारी पीढ़ी के महानतम व्यक्ति की अभिलाषा तो यही है कि हर आंख से हर आंसू पोछा जाए। यह हमारे बस की बात न भी हो, तब भी, जब तक आंसू हैं और पीड़ा है, हमारा काम खत्म नहीं होगा। और इसी सन्दर्भ में उन्होंने भाखडा नंगल बांध का उद्घाटन करते हुए अपने भाषण में आधुनिक भारत के मंदिरों की बात कही। हिंदुस्तान टाइम्स अखबार ने लिखा, अत्यंत भावपूर्ण शब्दों में प्रधानमंत्री ने इन स्थानों को मंदिर और आराधना स्थल बताया जहां हजारों लोग, अपने दसियों लाख बंधुओं के कल्याण की खातिर एक बड़ी रचनात्मक गतिविधि में रत हैं। आधुनिक भारत के मंदिर- यह वाक्यांश उस थीम को अपने में समेटे हुए था जो सार्वजनिक क्षेत्र की परिकल्पना का आधार थी और जिस थीम के भाग के रूप में वैज्ञानिक समझ को बढ़ावा देने के लिए शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना की गयी, अस्पताल बनाए गए और संस्कृति के उन्नयन के लिए विभिन्न अकादमियों का गठन किया गया। आधुनिक मंदिरों के निर्माण का सिलसिला करीब चार-पांच दशक तक चलता रहा। सन् 1980 के दशक में इस प्रक्रिया को पलट दिया गया। इस दशक में अल्पसंख्यकों की खातिर शाहबानो फैसले को पलटने के सरकार के निर्णय से विघटनकारी राजनीति के एक लम्बे दौर की शुरुआत हुई। सांप्रदायिक ताकतों ने धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ प्रचार युद्ध छेड़ दिया। इसके साथ ही, पिछड़ों और दमितों के कल्याण के लिए सकारात्मक कदम के रूप में मंडल आयोग की रपट लागू करने के निर्णय ने मंदिर राजनीति, जो पहले से ही हिन्दू राष्ट्रवादियों के रणनीतिक एजेंडा का हिस्सा थी, को जबरदस्त बल दिया। नेहरु के आधुनिक भारत के मंदिरों का निर्माण करने की बजाय, मस्जिदों के नीचे मंदिर खोजे जाने लगे। बाबरी मस्जिद को लेकर खड़ा किया गया विवाद, इसी अभियान का हिस्सा था। सन् 1980 में संघ परिवार में एक नए सदस्य का जन्म हुआ। वह सदस्य थी भाजपा। कुछ दिन तक यह नई पार्टी गांधीवादी समाजवाद में आस्था रखने का नाटक करती रही। इसका नेतृत्व नर्म नेता का मुखौटा पहने अटलबिहारी वाजपेयी की हाथ में था। वाजपेयी संघ की विचारधारा में पूर्ण आस्था रखते थे। हिन्दू तन मन, हिन्दू जीवन, उन्होंने अपने बारे में लिखा था। लेकिन उन्होंने बड़ी सफाई से अपने असली हिन्दू राष्ट्रवादी चेहरे को ढंक कर रखा। बाद में उनकी जगह लालकृष्ण आडवाणी ने ले ली। आडवाणी ने मंदिर वहीं बनाएंगे का नारा बुलंद किया। संघ परिवार लोगों को यह समझाने में सफल रहा कि भगवान राम का जन्म ठीक उसी स्थान पर हुआ था जहां बाबरी मस्जिद थी। मंडल आयोग की रपट के लागू होने से राम रथयात्रा को और ताकत मिली। यात्रा अपने पीछे खून की एक गहरी रेखा छोड़ती गई। सन् 1990 के आसपास, देश के विभिन्न हिस्सों में इस यात्रा के गुजरने के बाद हुई हिंसा में करीब 1,800 लोग मारे गए। लालूप्रसाद यादव द्वारा आडवाणी की गिरफ्तारी के साथ यह यात्रा समाप्त हो गई। सन् 1992 के छह दिसंबर को चुने हुए कारसेवकों ने बाबरी मस्जिद को जमींदोज कर दिया। उन्हें बाकायदा इसका प्रशिक्षण दिया गया था और उन्होंने इसकी रिहर्सल भी की थी। जिस समय मस्जिद तोड़ी जा रही थी, मंच पर आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी और उमा भारती भी थे। मंच से एक धक्का और दो, बाबरी मस्जिद तोड़ दो और ये तो केवल झांकी है, काशी, मथुरा बाकी है- जैसे नारे लगाए जा रहे थे। बाबरी मस्जिद के गिराए जाने के बाद मुंबई, भोपाल, सूरत और कई अन्य शहरों में भयावह सांप्रदायिक हिंसा हुई। और अंततः हमारी न्याय प्रणाली ने हिन्दू राष्ट्रवादी ताकतों के समक्ष समर्पण करते हुए इस मामले का निर्णय आस्था के आधार पर सुना दिया। फैसले में उन लोगों के नाम लिए गए जिन्होंने मस्जिद के ध्वंस का नेतृत्व किया था मगर उन्हें उनके अपराध की कोई सजा नहीं दी गई। न्यायपालिका ने मस्जिद की पूरी जमीन हिन्दू पक्ष को दे दी।अपनी इस सफलता से आल्हादित संघ परिवार ने देश से और विदेशों से भी भारी धनराशि एकत्र की और उससे बना भव्य राममंदिर अब तैयार है। इसका उद्घाटन पूरे हिन्दू कर्मकांडों के साथ स्वयं प्रधानमंत्री करेंगे। औपचारिक रूप से धर्मनिरपेक्ष सरकार के मुखिया के हाथों यह मंदिर जनता के लिए खुलेगा। जब तक बाबरी मस्जिद थी, तब तक वह भाजपा के चुनाव अभियान का महत्वपूर्ण हिस्सा हुआ करती थी। उसके बाद से भव्य राममंदिर का निर्माण पार्टी के चुनाव घोषणापत्रों और वायदों का अहम हिस्सा रहा है। गुजरे सालों में मुसलमान अपने मोहल्लों में सिमट गए हैं, देश का सांप्रदायिक आधार पर ध्रुवीकरण हुआ है और भाजपा की चुनावी ताकत में जबरदस्त वृद्धि हुई है। वर्तमान स्थिति का सारगर्भित वर्णन लेखक ए.एम. सिंह ने इन शब्दों में किया है सत्ता में आने के बाद से, भाजपा के राजनैतिक आख्यान ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक तनाव को बढ़ाया है। और भाजपा सरकार ने इसी दिशा में कई कदम भी उठाए हैं। संविधान के अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी किया गया और नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) पारित किया किया... भारत की नागरिकता को हिंदुत्व के सिद्धांतों के आधार पर पुनर्परिभाषित कर, भाजपा सरकार ने हमारे संविधान में निहित धर्मनिरपेक्षता के मूल्य के भविष्य और उसकी विरासत को किरच-किरच कर दिया है। अपने मोहल्लों में सिमटे मुसलमान, समाज के हाशिये पर धकेल दिए गए हैं। उन्हें दूसरे दर्जे का नागरिक बना दिया गया है। मंदिर के उद्घाटन के मौके का इस्तेमाल हिन्दुओं को गोलबंद करने के लिए किया जा रहा है। अमेरिका और अन्य देशों में अप्रवासी भारतीय इससे जुड़े कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। देश के भीतर, आरएसएस और उसके परिवार के सदस्य हिन्दुओं को इस बात के लिए प्रेरित कर रहे हैं कि या तो वे नए मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम में जाएं या उस दिन स्थानीय मंदिरों में जाकर पूजा-अर्चना करें।इस समारोह में किसे आमंत्रित किया गया है और किसे नहीं, इसको लेकर भी कुछ विवाद सामने आये हैं। पहले मंदिर ट्रस्ट ने बाबरी मस्जिद के ध्वंस के मुख्य आर्किटेक्ट अडवाणी और उनके नजदीकी सहयोगी मुरली मनोहर जोशी से कहा कि- इन दोनों नेताओं की उम्र और अयोध्या में उस समय जबरदस्त ठण्ड पड़ने की सम्भावना के चलते उन्हें कार्यक्रम में नहीं आना चाहिए। बाद में शायद इस मसले पर पुनर्विचार हुआ और विहिप ने दोनों को आमंत्रित किया।बाबरी मस्जिद के ध्वंस ने फिरकापरस्त ताकतों को सत्तासीन किया और अब मंदिर के उद्घाटन का उपयोग ध्रुवीकरण को और गहरा करने और उससे चुनावों में लाभ लेने के लिए किया जा रहा है। लोगों को अयोध्या ले जाने के लिए बड़ी संख्या में विशेष रेलगाड़ियों और बसों का इंतजाम हो रहा है। यह वह समय है जब हमें नेहरु के आधुनिक भारत के मंदिरों की संकल्पना और वैज्ञानिक समझ के विस्तार और विकास के प्रयासों को याद करना चाहिए।

अयोध्या रामलला प्राण प्रतिष्ठा आयोजन संबंध में बैठक सम्पन्न

योगी बोले, अयोध्या की सुरक्षा और स्वच्छता से समझौता नहीं

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि मंदिर में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह को अलौकिक, अभूतपूर्व और अविस्मरणीय बनाने के लिए राज्य सरकार के स्तर से सभी आवश्यक प्रबन्ध करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा है कि आज पूरी दुनिया अयोध्या की ओर उत्सुकता से देख रही है। हर कोई अयोध्या आना चाहता है। पूरा देश राममय है। यह उत्तर प्रदेश की ग्लोबल ब्रांडिंग का सुअवसर भी है। उन्होंने कहा है कि प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में आने वाले अतिथियों तथा उसके बाद पर्यटकों,श्रद्धालुओं के आगमन को सुखद, संतोषप्रद अनुभव के लिए राज्य सरकार कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेगी। उन्होंने कहा कि जमसहयोग से अयोध्या नगरी सुरक्षा, सुविधा और स्वच्छता का मानक होगी। मंगलवार को एक उच्चस्तरीय बैठक में मुख्यमंत्री ने अयोध्या में संचालित विभिन्न परियोजनाओं की समीक्षा की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। अवधपुरी में भव्य-दिव्य श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण में श्रीरामलला के विराजमान होने की बहुप्रतीक्षित साध पूरी होने में अब कुछ ही दिवस शेष हैं। यह श्रीराममंदिर राष्ट्रमन्दिर के रूप में भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक एकता का प्रतीक होगा। प्राण प्रतिष्ठा का यह ऐतिहासिक कार्यक्रम करोड़ों सभी सनातन आस्थावानों के लिए हर्ष-उल्लास, गौरव और आत्मसंतोष का अवसर है। पूरा देश राममय है। 22 जनवरी को सायंकाल हर देव मंदिर में दीपोत्सव मनाया जाएगा। हर सनातन आस्थावान अपने घरों,प्रतिष्ठानों में रामज्योति प्रज्वलित कर रामलला का स्वागत करेगा। यह सब अभूतपूर्व है। भावुक करने वाला है। यह हमारा सौभाग्य है कि हम उस प्रदेश में निवासरत हैं, जहां प्रभु श्रीराम ने अवतार लिया। पूरी दुनिया आज अयोध्या की ओर उत्सुकता से देख रही है। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही उत्तर प्रदेश की ग्लोबल ब्रांडिंग के लिए सुअवसर मिला है। प्राण-प्रतिष्ठा के उपरांत हर दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालुध्पर्यटक अवधपुरी आएंगे। उत्तर प्रदेश आगमन पर उन्हें अलौकिक अनुभूति हो, इसके लिए उत्कृष्ट आतिथ्य की सभी व्यवस्थाएं की जाएं। रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में पूरे देश से गणमान्य जनों का आगमन हो रहा है। ऐसे ऐतिहासिक अवसर पर पूरी अवधपुरी की भव्य साज-सज्जा की जानी चाहिए। श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट और केंद्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय बनाते हुए यातायात प्रबंधन, प्रोटोकॉल के अनुरूप अतिथियों के स्वागत-सत्कार हेतु सभी आवश्यक प्रबंध किए जाएं। आतिथ्य-सत्कार में स्वच्छता एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। सभी को इस पर काम करना होगा। जनसहयोग लें। अतिरिक्त मैनपॉवर तैनात करें। मुख्य मार्ग हो या कि गलियां धूल न उड़े, गंदगी न हो। जगह-जगह कूड़ेदान रखे हों। वेस्ट मैनेजमेंट की व्यवस्था हो।राज्य सरकार द्वारा अवधपुरी में संचालित किए जाने वाले भोजनालय,भंडारा को श्माता शबरी के नाम पर स्थापित किया जाए। इसी प्रकार रैन बसेरे को निषादराज गुह्य अतिथि गृह के रूप में विकसित किया जाएगा। अन्य भवनों के नामकरण भी इसी प्रकार रामायणकालीन चरित्रों के नाम पर किया जाएगा। 22 जनवरी के उपरांत अयोध्या में दुनिया भर से रामभक्तों का आगमन होगा। उनकी सुविधा के लिए पूरे नगर में विभिन्न भाषाओं में साइनेज लगाए जाएं। संविधान की 08वीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं और संयुक्त राष्ट्र की 09 भाषाओं में साईनेज हों। प्रयागराज-अयोध्या,गोरखपुर- अयोध्या, लखनऊ-अयोध्या, वाराणसी-अयोध्या मार्ग पर स्मार्ट साइनेज लगाये जाएं। विभिन्न भाषाओं में सूचना प्रसारित हो। इन मार्गों पर अतिक्रमण कतई न हो। स्वच्छता हो। रेहड़ी-पटरी व्यवसायी न हो। क्रेन, एम्बुलेंस की उपलब्धता हो। इसके लिए मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा संबंधित जनपदों को निर्देशित किया जाए। श्रद्धालुओं,पर्यटकों को अयोध्या आगमन के लिए प्रयागराज, गोरखपुर, वाराणसी लखनऊ से वॉल्वो बसों और हेलीकॉप्टर सेवा से जोड़ने के लिए तैयारी करें। अयोध्या में तीन हेलीपैड तैयार हैं, इनका समुचित उपयोग होना चाहिए।

इलेक्ट्रॉनिक की दुकान में लगी भीषण आग,6 लाख से ज्यादा का सामान जलकर राख

रायबरेली। जनपद में शॉर्ट सर्किट से इलेक्ट्रॉनिक की दुकान में भी आग लग गई है। आग लगने की सूचना पर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और आग पर काबू पाने का प्रयास किया। लेकिन बढ़ती आग को देखकर जब आग पर काबू नहीं हो सकी तो फायर बिग्रेट की गाड़ी को सूचना दी गई। सूचना पर पहुंची फायर बिग्रेट की गाड़ी ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। बताया जा रहा है लाखों रुपए का इलेक्ट्रॉनिक सामान चलकर पूरी तरह से राख हो गया। मामला लालगंज थाना क्षेत्र का है। जहां के रहने वाले मोहम्मद इस्माइल पुत्र स्व जिब्राइल की दुकान में शॉर्ट सर्किट की वजह से अचानक भीषण आग लग गई। जिससे दुकान में रखा सारा सामान जलकर राख में तब्दील हो गया। जैसे ही इसकी जानकारी दुकानदार को हुई वह तत्काल अपनी दुकान पर पहुंचा और फायर ब्रिगेड को सूचना दी। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया था। लेकिन जब तक सारा सामान जलकर खाक हो चुका था। पीड़ित दुकानदार ने बताया कि आग लगने से लगभग 6 लाख का नुकसान हुआ हैस जैसे ही इसकी सूचना सुबह व्यापार मंडल के पदाधिकारियों को हुई वह तत्काल मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का जायजा लिया।

तुलसीदास की जन्मस्थली का समग्र पर्यटन विकास करेगी सरकार, 21 करोड़ मंजूर

चित्रकूट के राजापुर के विकास खातिर जारी हुई साढ़े चार करोड़ की पहली किश्त-जयवीर

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन वर्णन से श्रीरामचरित मानस की रचना कर विश्व में ख्याति अर्जित करने वाले गोस्वामी तुलसीदास की जन्मस्थली चित्रकूट के राजापुर का समग्र पर्यटन विकास होगा। प्रदेश सरकार ने 21 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी है। इसमें पहली किश्त के रूप में 04.50 करोड़ रुपये जारी कर दिए गए हैं। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि रामचरित मानस हमारा पवित्र ग्रंथ है, बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की आस्था इसके साथ जुड़ी है। यही श्रद्धा राम चरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास के साथ भी जुड़ी है। बड़ी संख्या में लोग उनकी जन्मस्थली भ्रमण करने जाते हैं।

हमारा प्रयास है कि इस स्थल का समग्र पर्यटन विकास किया जाए, जिससे आने वाले पर्यटकों को असुविधा न हो। उनके लिए भ्रमण के साथ ठहरने की अच्छी व्यवस्था हो।यह डिजिटल युग है, खासकर युवा पीढ़ी और बच्चों के दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा है। डिजिटल माध्यम से लोगों को रामचरितमानस पढ़ने, गोस्वामी तुलसीदास के जीवन से परिचित कराने की व्यवस्था भी की गई है। चित्रकूट स्थित राजापुर में तुलसी स्मारक के पास करीब ढाई एकड़ में विकास कार्य होंगे। इसमें स्मारक के किनारे सुंदरीकरण कराया जाएगा। पार्क बनाया जाएगा, औषधीय पौधे लगाए जाएंगे।

बच्चों के खेलने के लिए झूले आदि की व्यवस्था होगी। डोरमेट्री बनेगी। डिजिटल लाइब्रेरी और इंटरप्रेटेशन सेंटर बनाया जाएगा। यहां लोग डिजिटल रूप से रामायण पढ़ सकेंगे और गोस्वामी तुलसीदास के जीवन से परिचित हो सकेंगे। इसके अलावा ओपन थिएटर, लैंडस्केप सहित कई और कार्य कराए जाएंगे। इस समय घरेलू पर्यटन के मामले में उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है। यहां पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है। पर्यटक सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। हमारा प्रयास है कि पर्यटक विशेष अनुभव लेकर लौटें।

यूपी पुलिस भर्ती और प्रोन्नति बोर्ड ने 3 भर्ती परीक्षाओं की तारीख की घोषित

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती बोर्ड द्वारा जारी अधिसूचना के मुताबिक रेडियो संवर्ग में कर्मशाला कर्मचारी, प्रधान परिचालक और सहायक परिचालक के पदों के लिए लिखित परीक्षा का आयोजन 29 जनवरी से 10 फरवरी तक किया जाएगा। उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से अधिसूचना देख सकते हैं। इन तीनों भर्ती परीक्षाओं के जरिए कुल 2,430 पद भरे जाएंगे। इनमें रेडियो संवर्ग में सहायक परिचालक के लिए 1,374 पद हैं। प्रधान परिचालक के 936 और कर्मशाला कर्मचारी के 120 पदों पर भर्ती होनी है। इस भर्ती के लिए आधिकारिक अधिसूचना जनवरी, 2022 में जारी की गई थी। इसके बाद से ही उम्मीदवार परीक्षा तारीखों का इंतजार कर रहे थे। अब 2 साल के बाद इस भर्ती के लिए परीक्षा का आयोजन करवाया जाएगा। ये तीनों भर्ती परीक्षाएं ऑनलाइन मोड में आयोजित की जाएंगी। इसमें हिंदी, सामान्य ज्ञान और विज्ञान, संख्यात्मक और मानसिक योग्यता, मानसिक अभिरूचि और तार्किक क्षमता से सवाल पूछे जाएंगे। प्रत्येक भाग से 40-40 सवाल पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न पर 2.5 अंक मिलेंगे, इस तरह परीक्षा 400 अंक की होगी।परीक्षा हल करने के लिए 2.30 घंटे का समय दिया जाएगा। खास बात ये है कि परीक्षा में किसी भी प्रकार का नकारात्मक अंकन नहीं होगा। ये भर्ती परीक्षाएं 29 जनवरी से 10 फरवरी के बीच अलग-अलग पालियों में आयोजित की जाएंगी। ऐसे में परीक्षा परिणाम नॉर्मलाइजेशन पद्धति से तैयार होगा। परीक्षा संपन्न होने के बाद उत्तर कुंजी जारी की जाएगी और उम्मीदवारों को आपत्ति दर्ज कराने के लिए 3 दिन का समय मिलेगा। इसके बाद परिणाम जारी होगा। लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण उम्मीदवारों को दस्तावेज सत्यापन, शारीरिक मानक परीक्षा और शारीरिक दक्षता परीक्षा के लिए बुलाया जाएगा।उत्तर प्रदेश पुलिस में आरक्षी नागरिक पुलिस (कांस्टेबल) के पदों पर सीधी भर्ती, 2023 के लिए आवेदन प्रक्रिया भी चल रही है। इस भर्ती अभियान के जरिए कुल 60,244 पद भरे जाएंगे। इसके लिए मान्यता प्राप्त संस्थान से 12वीं पास उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करने की आखिरी तारीख 16 जनवरी है। उम्मीदवारों का चयन लिखित परीक्षा, दस्तावेज सत्यापन, शारीरिक मानक परीक्षण और शारीरिक दक्षता परीक्षण के आधार पर होगा।

लोकसभा चुनाव में अपना दल एस का कायम रहेगा सौ फीसदी जीत का रिकार्डः अनुप्रिया

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। लोकसभा चुनाव के समर में अपना दल सोनेलाल ने अपनी जीत का रिकार्ड सौ प्रतिशत कायम रखने की दिशा में नए वर्ष पर अपना कदम आगे बढ़ा दिया है। अपना दल एस एनडीए का अंग है। लखनऊ में पार्टी के कैम्प कार्यालय में आज नववर्ष मिलन समारोह सह मासिक बैठक में पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने इस दिशा में काम करने के लिए पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए उनमें जोश भरा। श्रीमती पटेल ने कहा कि किसी भी पार्टी के लिए विधानसभा व लोकसभा में सदस्यों की संख्या काफी मायने रखती है, जिस तरह से आपके प्रयास से 2017, 2019, 2022 में निरंतर सफलता का प्रतिशत बढ़ा है, वह मील का मात्र एक पत्थर है। 2023 के उपचुनाव में भी आपके प्रयास से पार्टी ने सौ फीसद जीत का रिकार्ड कायम रखा। उपचुनाव में दोनों सीटों पर पार्टी ने दमदारी से चुनाव लड़ा और शानदार जीत दर्ज करायी, जिसमें रामपुर के स्वार विधानसभा का उपचुनाव इतिहास के पन्ने में दर्ज हो गया। पार्टी ने एनडीए को पहला अल्पसंख्यक विधायक दिया। अभी और भी आगे जाना है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अपना दल के पुराने रिकार्ड को कायम करते हुए 24 में भी बढ़ती हुई संख्या की भागीदारी दर्ज करानी है।केंद्रीय मंत्री श्रीमती पटेल ने कहा कि अपना दल एस एक वैचारिक पार्टी है। विचारधारा की लड़ाई को वही आगे बढ़ा सकता है, जो स्वयं विचारधारा में विश्वास रखता हो। पार्टी अध्यक्ष ने कहा कि राजनीति में धैर्य की बहुत जरूरत होती है। हमारी पार्टी में तमाम ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपने खून पसीने से सींच कर इस मुकाम तक पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि जो लाभ के लिए व्याकुल होते हैं वह लंबा सफर तय नहीं कर पाते। पार्टी कार्यकर्ताओं को नए वर्ष में नए उत्साह एवं नई ऊर्जा के साथ आगामी लोकसभा चुनाव को फतह करने के लिए अभी से लग जाना होगा। इस अवसर पर पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री आशीष पटेल ने कहा कि पार्टी का ट्रैक रिकार्ड 2024 में भी कायम रहेगा। आप सभी का उत्साह देखकर यह सुनिश्चित हो गया।

दरवाजे का ताला काटकर लाखों की चोरी

हरदोई। जनपद की शाहाबाद कोतवाली क्षेत्र में चोरियां कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। बीते माह डेढ़ दर्जन से अधिक चोरियां हो चुकी हैं, लेकिन पुलिस एक भी चोरी का खुलासा नहीं कर सकी है। इससे चोरों के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं। बीती रात चोरों ने अपने पति का इलाज कराने के लिए हरदोई अस्पताल गई एक महिला के मकान का ताला तोड़कर लगभग तीन के जेवर और नकदी पर हाथ साफ कर दिया। सुबह जब किराएदार महिला अपने घर पहुंची तो सब कुछ देखकर दंग रह गई। सूचना पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और मौका मुआयना किया। शाहाबाद कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला चौक में राम प्रकाश शुक्ला के मकान में पूनम देवी पत्नी राम प्रकाश निवासी गोटिया कैमी किराए पर रहती हैं। पति की तबीयत ज्यादा खराब होने की वजह से पूनम अपने पति को निजी हॉस्पिटल में दिखाने हरदोई ले गई, जहां डॉक्टरों ने पति को देखने के बाद एक दिन के लिए भर्ती कर लिया। घर पर पूनम का चौदह वर्षीय बेटा अकेले था। पति के भर्ती हो जाने के बाद पूनम ने अपने बेटे को अल्लाहपुर रिश्तेदारी में भेज दिया। बेटा दरवाजे में ताला डाल कर गया था।

इदारा मक़सदे हुसैनी के तत्वाधान में मदरसों के छात्र व छात्राओं को दिये गये ईनाम

लखनऊ। कश्मीरी मोहल्ला स्थित इदारा मक़सदे हुसैनी के तत्वाधान में मदरसों के सालाना इम्तेहान के परीक्षाफल की घोषणा एंव कामयाब छात्र व छात्राओं के लिये तकसीम इनामात व सर्टिफिकेट प्रोग्राम का आयोजन बाद नमाजे़ अस्र कशमीरी मोहल्ला स्थित एम एच हाल में किया गया। प्रोग्राम की शुरुआत तिलावते रब्बानी से क़ारी शेख जौन अली ने किया। परीक्षा में लगभग 200 बच्चों ने हिस्सा लिया। प्रोग्राम की अध्यक्षता इदारे के जनरल सेक्रेटरी, आलमनगर मस्जिद के इमामे जुमा व शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड के सदस्य मौलाना सै0 रजा हुसैन रिजवी ने जबकि संचालन एस एम अमन ने किया। इदरे के प्रवक्ता शाज़ रिज़वी ने प्रेस रिलीज़ जारी करते हुये बताया कि प्रोग्राम में मुख्य अतिथि के तौर पर मजलिस उल्माए हिन्द के जनरल सेक्रेटरी व शाही आसफी मस्जिद के इमामे जुमा आफताबे शरीयत मौलाना सै0 कल्बे जव्वाद नक़वी एंव मरजा आली क़द्र आयतुल्लाह सैयद अली हुसैन सीस्तानी के लखनऊ में वकील मौलाना सै0 अशरफ अल ग़रवी मौजूद थे जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में मौलाना तस्नीम मेहदी, मौलाना तफ़्सीर हुसैन, मौलाना मज़हर इमाम, मौलाना मो0 अली, मौलाना डा0 मन्ज़र अली आरफ़ी, मौलाना हसन जाफ़र, मौलाना अली रज़ अश्तर, मौलाना अख़्तर हुसैन, मौलाना शहाब हुसैन, मौलाना अरशद हुसैन मूसवी, मौलाना मो0 हुसैन, मौलाना असकरी हुसैन, मौलाना फ़िरोज़ अब्बास एंव मौलाना सै0 शबाहत हुसैन रिज़वी मौजूद थे। इसके अलावा मदरसा बोर्ड के सदस्य तनवीर हुसैन, अल्पसंख्या आयोग के सदस्य समान अफ़रोज़, अम्बर फ़ाउन्डेशन के चेयरमैन वफ़ा अब्बास, राजा बाजार के सभासद राहुल मिश्रा, किसान मोर्चा के प्रमोद सिंह, साबिर नवाब, जावेद हैदर, कुमैल अली, शेख औन अली, तौहीद बहजती, अल्ताफ़ हुसैन, आज़म अब्बास, रफ़ी हुसैन, रफ़ीक़ हुसैन, रईस हैदर, डा0 बाक़र मेहदी के अतिरिक्त शहर के संभ्रान्त व्यक्तियों ने शिरकत करके बच्चों का उत्साह बढ़ाया।

मदरसों के टीचरों तत्हीर अब्बास और रशिया फ़ातिमा ने मदारिस के कामों पर प्रकाश डाला और मौलाना मोहम्मद अली नक़वी ने लोगों का शुक्रिया अदा किया। श्री शाज़ ने बताया कि इदारे के तत्वाधान में आयोजित हुये समर क्लासेज में पहली पोज़ीशन हासिल करने वाले उम्मीदवारों को इराक़ स्थिति कर्बला की ज़ियारत के लिये मौलाना सै0 कल्बे जव्वाद नक़वी के हाथों टिकट दिये गये। इस मौके पर मौलाना सै0 कल्बे जव्वाद नक़वी ने शिक्षा की अहमियत पर प्रकाश डालते हुये कहा कि आज के दौर में जहाँ दुनियावी तालीम जरूरी है वहीं दीनी शिक्षा के बगैर कामयाबी मुमकिन नहीं है इस लिये हमें चाहिये कि हम अपने बच्चों को अस्री तालीम के साथ साथ दीन की शिक्षा भी जरूर दें। उन्होंने कहा कि दीने इस्लाम और इबादते ख़ुदा को जानने के लिये दीनी तालीम से आरास्ता होन बहुत आवश्यक है यह वह शिक्षा है जो हमें दुनिया के साथ साथ आख़िरत में नजात की ज़ामिन है।इदारे के जनरल सेक्रेटरी, आलमनगर मस्जिद के इमामे जुमा व शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड के सदस्य मौलाना सै0 रजा हुसैन रिजवी बताया कि कौशाम्बी, इलाहाबाद के अलावा कश्मीरी मोहल्ला स्थिति मदरसा कौसर उल उलूम, मदरसा सरकारे हुसैनी, रूस्तमनगर स्थिति मुरशद की मस्जिद में चल रहे मदरसा पन्जतनी, विक्टारिया स्टरीट स्थिति अफ़्ज़ल महल के मदरसा अल बक़ी, कश्मीरी मोहल्ला स्थिति फ़िरोज़ी मस्जिद के मदरसा फ़िरोज़िया, मुफ़्ती गंज स्थिति मदरसा सुग़रा, मेहदी गंज स्थिति मदरसा अज़मत उल दौला बहादुर के छात्र व छात्राओं की परीक्षा इदारे के तत्वाधान में आयोजित की गयी थी जिसमें उत्तीर्ण छात्र व छात्राओं की हौसला अफ़ज़ाई के लिये इस प्रोग्राम को आयोजित कर के उन्हें ईनामों से सरफ़राज़ किया जा रहा है ताकि वह और ज्यादा दिल लगा कर दीनी तालीम हासिल करें एंव बेहतर समाज व मुआशिरे की तशकील करें और एक खुशगवार माहौल पैदा हो। इसी के साथ उन्होंने कामयाब छात्र व छात्राओं और सरपरस्तों एंव अध्यापक व अध्यापिकाओं को उनकी मेहनत के लिये मुबारकबाद दी।

मेड़ काटने को लेकर बवाल, महिला और परिवार को खेत में गिराकर पीटा

प्रयाग दर्पण संवाददाता

गोण्डा। जिले के मोतीगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत एक गांव में जमीनी विवाद को लेकर के दो पक्षों में जमकर मारपीट किए जाने का मामला सामने आया है। जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है वायरल वीडियो में खेत जुताई के दौरान मेड़ काटने के बाद लोग आपस में मारपीट करते हुए नजर आ रहे हैं। फिलहाल वायरल वीडियो के आधार पर मोतीगंज थाने की पुलिस पूरे मामले में जांच कार्यवाही करने में जुटी हुई है। दरअसल मोतीगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत चोरीहर्षोपट्टी गांव में खेत जुताई के दौरान ट्रैक्टर से मेड़ कट जाने को लेकर के गांव के रहने वाले विपक्षी घनश्याम शुक्ला,राजेश शुक्ला और संतोष शुक्ला ने एक राय होकर के दबंगई दिखाते हुए राजकरण सोनकर और ललिता देवी के साथ जमकर गाली गलौज करते हुए जाति सूचक शब्दों का प्रयोग किया। जब परिवार के लोगों ने विरोध किया तो दबंगों ने जमकर महिलाओं और लड़कियों के साथ मारपीट की। जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। पीड़ित राजकरण सोनकर और ललिता देवी ने गांव के ही रहने वाले घनश्याम शुक्ला,राजेश शुक्ला और संतोष शुक्ला के खिलाफ मोतीगंज थाने में तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की है।

बाइक की टक्कर से साइकिल सवार की मौत

बहराइच। तुलसीपुर क्षेत्र में रविवार शाम तेज रफ्तार बाइक की टक्कर से गंभीर रूप से घायल अधेड़ की उपचार के दौरान मौत हो गई। इस हादसे में बाइक सवार घायल हो गया। भिनगा क्षेत्र के खजुहा झुनझुनिया निवासी सांवली प्रसाद यादव (55) सोमवार देर शाम गेहूं की पिसाई कराकर साइकिल से घर लौट रहा था। रास्ते में तेज रफ्तार बाइक सवार ने साइकिल में टक्कर मार दी। इस हादसे में सांवली प्रसाद गंभीर रूप से घायल हो गया। बाइक सवार गिलौला क्षेत्र के हरिवंशपुर निवासी राजितराम भी जख्मी हो गया। स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची एंबुलेंस से दोनों घायलों को संयुक्त जिला चिकित्सालय भिनगा पहुंचाया। सांवली प्रसाद की हालत गंभीर देख चिकित्सक ने उसे मेडिकल कॉलेज बहराइच रेफर कर दिया गया, जहां उपचार के दौरान देर रात उसकी मौत हो गई।

ट्रक की टक्कर से कार पलटी, युवती की मौत छह घायल

बस्ती। विहटा मुंडेरवा निवासी एक ही परिवार के सात लोग तरकुलहा जाने के लिए निकले थे। मंझरिया गांव के सामने फोरलेन पर ट्रक की टक्कर से कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर पर चढ़ कर पलट गई। हादसे में 19 वर्षीय ज्योति चौधरी पुत्री परमात्मा चौधरी की मौत हो गई। रामगढ़ताल इलाके के मंझरिया गांव के समीप सोमवार की शाम फोरलेन पर ट्रक की टक्कर से कार अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में कार में सवार एक युवती की मौत हो गई, जबकि एक वर्षीय मासूम समेत छह लोग घायल हो गए। चालक की हालत गंभीर बताई जा रही है। पुलिस ने सभी को इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया। कार सवार बस्ती से चौरीचौरा थाना क्षेत्र स्थित तरकुलहा देवी मंदिर जा रहे थे।जानकारी के मुताबिक, बस्ती के विहटा मुंडेरवा निवासी एक ही परिवार के सात लोग तरकुलहा जाने के लिए निकले थे। मंझरिया गांव के सामने फोरलेन पर ट्रक की टक्कर से कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर पर चढ़ कर पलट गई। हादसे में 19 वर्षीय ज्योति चौधरी पुत्री परमात्मा चौधरी की मौत हो गई। वहीं राजन चौधरी (18) पुत्र परमात्मा, रूबी चौधरी (22) पुत्री परमात्मा, पूजा अग्रहरि (20) पुत्री संपत अग्रहरि, अश्वनी चौधरी (19) पुत्र जय सिंह चौधरी निवासी गौरा धुंधा लालगंज जनपद बस्ती, सैम चौधरी (21) पुत्र हरि प्रसाद चौधरी निवासी रौता चौराहा कोतवाली जनपद बस्ती व एक वर्षीय टुकटुक चौधरी पुत्री योगेंद्र चौधरी विहटा मुंडेरवा घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि चालक राजन को छोड़कर सभी आंशिक रूप से घायल हुए हैं जिन्हें प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल से चिकित्सकों ने घर जाने की इजाजत दे दी है। कार को ठोकर मारकर भागने वाले ट्रक का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

तापीय, सौर व बायो ऊर्जा से पूर्ण होगी विद्युत की मांग-शर्मा

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने नववर्ष के दूसरे दिन प्रदेशवासियों को एक और शुभ समाचार देते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश तेजी से चौबीसों घण्टे निर्बाध, सस्ती व रोस्टर फ्री बिजली देने की तरफ आगे बढ़ रहा है। ऊर्जा मंत्री श्री शर्मा ने नववर्ष के प्रथम दिन विद्युत उपभोक्ताओं को एकमुश्त समाधान योजना की अवधि को 16 जनवरी तक बढ़ाये जाने की खुशखबरी दी थी, तो वहीं नववर्ष के दूसरे दिन भी लोगों को 24 घण्टे निर्बाध विद्युत अपूर्ति के साथ ही सस्ती बिजली देने का भी वादा किया है। उन्होंने कहा कि विद्युत आपूर्ति में यूपी देश में नंबर वन बना है, यह क्रम निरंतर जारी रहे, इसके लिए ऊर्जा विभाग द्वारा प्रदेश में बिजली की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए ऐतिहासिक कदम उठाये जा रहे हैं उन्होंने बताया कि जैसे कि 19 दिसम्बर 2023 को राज्य सभा में विद्युत आपूर्ति और उत्पादन के सम्बंध में पूछे गए सवाल के जवाब में केंद्रीय ऊर्जा मंत्री ने अपने जवाब में बताया था कि उत्तर प्रदेश वर्ष 2023 में मांग के सापेक्ष 28,284 मेगावाट की सर्वाधिक विद्युत आपूर्ति कर देश में प्रथम स्थान हासिल किया। अभी गत वर्ष के अंत में 28 दिसम्बर 2023 को 500 मेगावाट सौर ऊर्जा 2.67 रूपये प्रति यूनिट की दर से खरीदने के लिए भारत सरकार की संस्था एसईसीआई से अनुबंध किया गया। यह ऊर्जा प्रदेश को पहले की सरकारों द्वारा किए गये अनुबंधों की अपेक्षा आधी कीमत पर मिलेगी। इससे हमारी पावर परचेज लागत में काफी कमी आएगी और ऊर्जा की औसत दर भी कम होगी, जिसका सीधा लाभ उपभोक्ताओं को मिलेगा। इसके अतिरिक्त वर्ष-2023 में 1400 मेगावाट पवन ऊर्जा की खरीद के लिए भी अनुबंध किया गया। 3500 मेगावाट सौर ऊर्जा एवं 2000 मेगावाट जल ऊर्जा खरीदने की प्रक्रिया भी शुरू की गयी है। ऊर्जा मंत्री ने बताया कि तापीय ऊर्जा के सभी घरेलू संयंत्रों को जल्दी पूरा करते हुए, तापीय क्षमता को दोगुना करने का प्रयास भी लगातार जारी है। इसके अंतर्गत ओबरा-सी की पहली यूनिट से 660 मेगावाट विद्युत उत्पादन शुरू हो गया है। इसी प्रकार से जवाहरपुर की 2 गुणा 60 मेगावाट के तापीय संयंत्र से शीघ्र ही विद्युत उत्पादन शुरू करने का कार्य चल रहा। ओबरा-डी की 2 गुणा 800 मेगावाट के दो प्लांट और अनपरा में भी इसी क्षमता के बिल्कुल नये संयंत्र लगाने की प्रक्रिया शुरू है। पनकी में भी विद्युत इकाइयां चालू की जा रही हैं। श्री शर्मा ने बताया कि नवीन ऊर्जा के घरेलू उत्पादन को युद्ध स्तर पर बढ़ावा दिया जा रहा है। सौर ऊर्जा के अंतर्गत 7,000 मेगावाट विद्युत उत्पादन के लिए सोलर संयंत्र लगाये जाने का कार्य जारी है। रूफटाप सोलर से भी 300 मेगावाट विद्युत उत्पादन शुरू हो चुका है, अन्य संयंत्रों पर भी कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है। सौर ऊर्जा को स्टोर करने के लिए पम्प स्टोरेज के लिए भी सरकार ने कदम बढ़ाया है। इसके अंतर्गत 12,000 मेगावाट पम्प स्टोरेज प्रोजेक्ट पर कार्य चल रहा है।ऊर्जा मंत्री ने बताया कि किसानों को अप्रैल से जहां एक ओर नलकूप के बिल से मुक्ति दिलाई गयी है, वहीं उन्हें और भी लाभ देने के लिए सौर ऊर्जा की तरफ ले जाने का प्रयास किया जा रहा है।

सभासदों ने अर्धनग्न होकर मांगी भीख,अलाव जलवाने के लिए पालिका को दिए भीख के पैसे

उन्नाव। जनवरी माह के दूसरे दिन भी ठंड का प्रकोप जारी रहा। मंगलवार को उन्नाव में कोहरे के साथ भयंकर ठंड रही है। तापमान में गिरावट के साथ बर्फीली हवाएं भी चलती रही। इसी बीच उन्नाव नगर पालिका के वार्ड नंबर 13 के सभासद ने अर्धनग्न होकर पालिका के बाहर भीख मांगी है। जनता से भीख मांग कर कुछ पैसे नगर पालिका में जमा किए हैं। उनका कहना है उन्हें इस भयंकर ठंड में लकड़ी नहीं दी गई, जिससे वार्ड के लोग परेशान हैं। पालिकाध्यक्ष ने उन्हें आश्वासन दिया। उन्नाव के वार्ड नंबर 13 लोक नगर के सभासद पंकज लोधी आज नगर पालिका उन्नाव गेट पर पहुंचे। अर्धनग्न होकर उन्होंने गुजरने वाले लोगो से भीख मांगी है। इस दौरान उनके समर्थन में कई और लोग भी पहुंचे आक्रोश देख पालिका के दरवाजे को बंद कर दिया। सभासद ने कहा कि उनके वार्ड में न तो विकास कार्य कराए गए और ना ही इस भयंकर ठंड में अलोव जलाने के लिए लकड़ी दी जा रही है पिछले कई दिनों से वह लकड़ी की मांग कर रहे हैं लेकिन उन्हें सिर्फ आश्वासन दिया जा रहा है।

बीकेटी में मुख्य अभियंता ने की बैठक,रीडिंग में गड़बड़ी को लेकर सुपरवाइजर पर कार्रवाई के लिए किया निर्देशित

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। बख्शी का तालाब क्षेत्र के विद्युत उपकेंद्र पर मुख्य अभियंता ने अधिकारियों तथा कर्मचारियों के साथ बैठक की। मंगलवार दोपहर बाद तक चली इस बैठक में मुख्य अभियंता ने विद्युत बिल की एकमुश्त समाधान योजना की तिथि बढ़ाए जाने की जानकारी दी। वहीं मीटर रीडिंग में गड़बड़ी को लेकर सुपरवाइजर को फटकार लगायीं। घरेलू कनेक्शन से वाणिज्यिक इस्तेमाल होने पर उन्हें कामर्शियल करने के लिए निर्देशित किया। वहीं अवर अभियंता और और कर्मचारियों को सख्त कार्रवाई करने को कहा। बीकेटी क्षेत्र के मामपुरबाना गांव में स्थित विद्युत उपकेंद्र पर मुख्य अभियंता लेसा ट्रांस गोमती प्रथम सुनील कपूर ने बख्शी का तालाब उपकेंद्र, कठवारा विद्युत उपकेंद्र ,इटौंजा विद्युत उपकेंद्र तथा कुम्हरांवा विद्युत उपकेंद्र के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ बैठक की। मंगलवार दोपहर बाद तक हुई इस बैठक में उन्होंने बताया कि विद्युत बिल में सुधार को लेकर चलायी जा रही एक मुश्त समाधान योजना को 16 जनवरी 2024 तक बढ़ा दिया गया है। उन्होंने इस योजना को क्षेत्रवासियों से अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए कहा है। वहीं विद्युत कनेक्शन मीटर रीडिंग में गड़बड़ी को लेकर इटौंजा क्षेत्र ध्के रीडिंग सुपरवाइजर सुशील चंद्रा को फटकार लगाई है। इटौंजा विद्युत उपकेंद्र के मीटर रीडर ने इलाके के 128 मकान बंद मिले दिखाया हैं। वहीं 1070 घर नाट फाउंड को दिखाया गया है जिसको लेकर मुख्य अभियंता ने सुपरवाइजर को फटकार लगा कर कारवाई के लिए निर्देशित किया है। मुख्य अभियंता ने घरेलू कनेक्शन का वाणिज्यिक इस्तेमाल पर कामर्शियल कनेक्शन बढ़ाने की कमी को लेकर कठवारा अवर अभियंता को फटकार लगाई है। वहीं मां चंद्रिका देवी मंदिर प्रांगण में स्थित दुकानों के कनेक्शनों की जानकारी में अवर अभियंता ने बताया मात्र 6-7 कनेक्शन ही हुए हैं। जबकि 70-80 दुकानदार हैं। मुख्य अभियंता ने निर्देश दिए कि सभी दुकानों में कनेक्शन दिए जायें।

तेज रफ्तार कार जंगली सूअर से टकराई,चार महिलाओं समेत आठ घायल

प्रयाग दर्पण संवाददाता

अमेठी। जिले में आवारा जानवरों से हादसे कम होने का नाम नहीं ले रहे हैं। देर रात तेज रफ्तार कार हाईवे पर जंगली सुअर से टकरा गई। हादसे में कार सवार चार महिलाओं समेत आठ लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को इलाज के लिए एम्बुलेंस से सुल्तानपुर जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका इलाज चल रहा है। पूरा मामला लखनऊ वाराणसी राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित भाले सुल्तान थाने के पास स्थित सिंह ढाबा के पास का है, जहां देर रात सुलतानपुर के हनुमानगंज बाजार के रहने वाले मनोज कुमार परिवार के एक महिला का इलाज करवाकर लखनऊ से सुलतानपुर आ रहे थे। देर रात करीब साढ़े

12 बजे मनोज की कार सिंह ढाबे के पास जंगली सुअर से टकरा गई। हादसा इतना भीषण था कि गाड़ी के परखच्चे उड़ गए और सुअर की मौके पर ही मौत गई। हादसे की जानकारी मिलते ही थोड़ी ही दूर पर मौजूद भाले सुल्तान थाने के एसओ प्रमोद कुमार बड़ी संख्या में पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और सभी घायलों को कड़ी मशक्कत के बाद गाड़ी से निकालकर पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही एम्बुलेंस की कई गाड़ियां मौके पर पहुंची, जिसके बाद सभी घायलों को जिला अस्पताल सुलतानपुर पहुंचाया गया, जहां सभी का इलाज चल रहा है। घायलो में तीन लोगों की हालत गंभीर है। हादसे में राजवती, रामवती, मनोज, सूरज, रंजीत, सुमन समेत आठ लोग घायल हैं। घायलों में तीन की हालत नाजुक बनी हुई है। एसओ प्रमोद कुमार ने कहा कि सुलतानपुर जिले के हनुमानगंज के रहने वाले कार सवार किसी महिला का इलाज करवाकर देर रात करीब 12.30 बजे लखनऊ से घर जा रहे थे। यहां कार सिंह ढाबे के पास जंगली सूअर से टकरा गई। हादसे में सभी कार सवार चार महिलाओं समेत आठ घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए सुलतानपुर जिला अस्तपताल में भर्ती कराया गया है।

थाना करैली पुलिस द्वारा 01 अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयागराज।थाना करैली पुलिस द्वारा थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 287/2023 धारा 381 भा0द0सं0 में वांछित अभियुक्त आशीष कुमार यादव पुत्र ओमकार यादव निवासी- ग्राम कोढा पोस्ट कोरा थाना मछलीशहर जनपद जौनपुर उ0प्र0 को आज दिनांक 02.01.2024 को अटाला के पास रसूलपुर स्लाटर हाउस के सामने रोड थाना क्षेत्र करैली से गिरफ्तार कर कब्जे से चोरी की 01 जोड़ी पायल सफेद धातु व 5720/- रुपये नकद बरामद किये गये । बरामदगी के आधार पर उक्त अभियोग में धारा 411 भा0द0सं0 की बढ़ोत्तरी की गयी। नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-आशीष कुमार यादव पुत्र ओमकार यादव निवासी- ग्राम कोढा पोस्ट कोरा थाना मछलीशहर जनपद जौनपुर, उम्र 26 वर्ष ।सम्बन्धित अभियोग का विवरण-मु0अ0सं0 287/2023 धारा 381/411 भा0द0सं0 थाना करैली कमिश्नरेट प्रयागराज।

एएसपी ने परेड की ली सलामी,आम जनमानस से अच्छा व्यवहार करने के निर्देश

प्रयाग दर्पण संवाददाता

अमेठी। जिले एएसपी ने रिजर्व पुलिस लाइन में परेड की सलामी ली। सलामी के बाद एएसपी ने परेड का निरीक्षण करने के बाद मौके पर मौजूद अधिकारियों और कर्मचारियों को आम जनमानस के प्रति उचित व्यवहार और अपराधों की रोकथाम को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान प्रतिसार निरीक्षण समेत बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी मौके पर मौजूद रहे।

दरअसल आज मंगलवार को अमेठी रिजर्व पुलिस लाइन पहुंचे अपर पुलिस अधीक्षक हरेन्द्र कुमार ने परेड की सलामी ली, जिसके बाद परेड का मान-प्रणाम ग्रहण करते हुए परेड का निरीक्षण किया गया।अपर पुलिस अधीक्षक के द्वारा मौके पर मौजूद अधिकारियों और कर्मचारियों को कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान और जनमानस से उचित व्यवहार, अपराधों की रोकथाम एवं समाज में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने हेतु आवश्यक हिदायतें दी गई। एएसपी ने रिजर्व पुलिस लाइन अमेठी के भोजनालय, बैरकों की साफ-सफाई, परिवहन शाखा, क्वार्टर गार्द, स्टोर, कैश और गणना कार्यालय का निरीक्षण कर प्रतिसार निरीक्षक को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

इस दौरान पुलिस लाइन के प्रतिसार निरीक्षक समेत बड़ी संख्या में अधिकारी और पुलिसकर्मी मौजूद रहे। इस दौरान एसपी ने पुलिस कर्मियों से दौड़ लगवाकर उनकी दक्षता को परखा। अपर पुलिस अधीक्षक हरेंद्र कुमार ने कहा कि आज परेड की सलामी ली गई है और पुलिसकर्मियों को अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान और आम जन मानस के प्रति अच्छा आचरण करने के निर्देश दिए गए हैं।

संक्षिप्त समाचार

पुलिस कार्यालय में जनसुनवाई

प्रयागराज। दिनांक-02.01.2024 को पुलिस उपायुक्त गंगानगर द्वारा पुलिस कार्यालय में जनसुनवाई कर फरियादियों की शिकायतें सुनी गई तथा निस्तारण हेतु सम्बंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

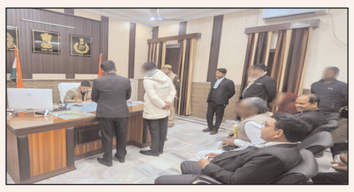

हज-2023 में हज कर चुके हाजियों के साथ बैठक

प्रयागराज।उ0प्र0 हज कमेटी के मा0 सदस्य हज कमेटी व प्रभारी प्रयागराज श्री सरवर सिद्दीकी द्वारा श्री मोहम्मद अमजद,नोडल अधिकारी (हज), प्रयागराज के साथ हज-2024 के पांच हज फैसिलीटेशन सेन्टर मदरसा मोहम्दिया महेवा, मदरसा मदरसतुल बनात मोहिद्दीनपुर भरेठा,तहसील, सदर, प्रयागराज, मदरसा अनवारूल उलूम (ब्वायज) हटिया, बहादुरगंज, मदरसा खदीजतुल कुबरा लिलबनात हंडिया, एवं आरनेलास हायर सेकेण्डरी स्कूल,नूरूल्लाहरोड,प्रयागराज का निरीक्षण किया गया है जिसमें हज-2023 में हज कर चुके हाजियों के साथ बैठक की गई तथा वर्ष 2023 में हुई कमियों के बारे में चर्चा की गई। मा0 सदस्य व प्रभारी उ0प्र0 हज कमेटी द्वारा कमियों को दूर करने के लिए सेन्ट्रल हज कमेटी मुम्बई व स्टेट हज कमेटी लखनऊ को अवगत कराने का अश्वासन दिया गया है।

छात्रवृत्ति के लिए ऑन-लाइन आवेदन करने की अन्तिम तिथि 10 जनवरी

प्रयागराज।वर्ष 2023-24 में दशमोत्तर छात्रवृत्ति/शुल्क प्रतिपूर्ति योजनान्तर्गत शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के लिए ऑन-लाइन आवेदन करने की अन्तिम तिथि शासन द्वारा निर्गत समय-सारिणी के अनुसार दिनांक 10 जनवरी, 2024 निर्धारित की गयी है। अतः जनपद में अध्ययनरत पात्र छात्र/छात्राओं को प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से सूचित किया जाता है कि शासन द्वारा निर्धारित तिथि के अन्दर ऑन-लाइन आवेदन पत्र छात्रवृत्ति की वेबसाइट scholarship.up.gov.in पर भर कर हार्ड कॉपी सम्बन्धित शिक्षण संस्था में जमा करें। यदि शासन द्वारा निर्धारित समय सीमा दिनांक 10 जनवरी, 2024 के अन्दर पात्र छात्र/छात्राओं द्वारा आवेदन पत्र नहीं भरा जाता है तो उसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी सम्बन्धित छात्र/छात्राओं की होगी।

पुलिस द्वारा अभियुक्त को कारावास व 05-05 हजार रूपये का अर्थदण्ड

प्रयागराज।"Operation Conviction'' के तहत प्रयागराज पुलिस द्वारा की गयी प्रभावी पैरवी के फलस्वरूप मु0अ0सं0-254/2016 धारा-363/366/376क/506 भा0द0सं0 व 3/4 पॉक्सो एक्ट के अभियुक्त का दोष सिद्ध का विवरण- न्यायालय विशेष न्यायाधीश पॉक्सो एक्ट-02 इलाहाबाद द्वारा थाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज पर पंजीकृत मु0अ0सं0-254/2016 धारा-363/366/376क/506 भा0द0सं0 व 3/4 पॉक्सो एक्ट के अभियुक्त कमलेश कुमार पुत्र शंकरलाल निवासी सैदाबाद थाना हण्डिया प्रयागराज को आज दिनांक 02.01.2024 को प्रभावी पैरवी के फलस्वरुप धारा 363/366 भा0द0सं0 में 05-05 वर्ष का कारावास व 05-05 हजार रूपये का अर्थदण्ड व धारा ङ पॉक्सो एक्ट में 10 वर्ष का कारावास व 10 हजार रूपये के अर्थदण्ड से एवं धारा-506 भा0द0सं0 में 02 वर्ष के कारावास से दण्डित किया गया ।दोष सिद्ध अभियुक्त का विवरण-अभियुक्त कमलेश कुमार पुत्र शंकरलाल निवासी सैदाबाद थाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज ।सम्बन्धित अभियोग का विवरण-मु0अ0सं0-254/2016 धारा-363/366/376क/506 भा0द0सं0 व 3/4 पॉक्सो एक्ट थाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज ।पैरवी करने वाली टीम का विवरण-1. विशेष लोक अभियोजक श्रीमती सविता पाठक ।2. प्र0नि0 धर्मेन्द्र कुमार दुबे, थाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज ।3. म0का0 रूबी सिंह कोर्ट मोहर्रिर ।4. का0 प्रदीप कुमार, पैरोकार थाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज।

थाना शंकरगढ़ पुलिस द्वारा 01 अभियुक्त गिरफ्तार,कब्जे से 20 लीटर अवैध देशी शराब बरामद

प्रयागराज।थाना शंकरगढ़ पुलिस द्वारा आज दिनांक 02.01.2024 को मुखबिर की सूचना पर ग्राम भैंसहाई मोड़ थाना क्षेत्र शंकरगढ़ से अभियुक्त पवन भारतीया पुत्र छोटेलाल ग्राम भैंसहाई थाना शंकरगढ़ प्रयागराज को गिरफ्तार कर, कब्जे से 20 लीटर अवैध देशी शराब बरामद की गयी ।उक्त गिरफ्तारी/बरामदगी के संबंध में थाना शंकरगढ़ में मु0अ0सं0 002/2024 धारा 60 आबकारी अधिनियम पंजीकृत किया गया । नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी । गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण- पवन भारतीया पुत्र छोटेलाल ग्राम भैंसहाई थाना शंकरगढ़ प्रयागराज, उम्र करीब 25 वर्ष।पंजीकृत अभियोग का विवरण-मु0अ0सं0 002/2024 धारा 60 आबकारी अधिनियम थाना शंकरगढ़ कमिश्नरेट प्रयागराज । बरामदगी का विवरण- 20 लीटर अवैध देशी शराब गिरफ्तारी/बरामदगी करने वाली पुलिस टीम का विवरण-1. हे0का0 राजेश सिंह यादव, थाना शंकरगढ कमिश्नरेट प्रयागराज ।2. हे0का0 संतोष त्रिपाठी, थाना शंकरगढ कमिश्नरेट प्रयागराज ।

थाना नैनी पुलिस द्वारा 01 अभियुक्त गिरफ्तार, कब्जे से 200 ग्राम अवैध नशीला पाउडर (डायजापाम) बरामद

प्रयागराज।थाना नैनी पुलिस द्वारा आज दिनांक 02.01.2024 को मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त संगम लाल भारतीया पुत्र स्व0 धर्मदेव भारतीया निवासी संजय नगर छिवकी थाना नैनी प्रयागराज को टीएसएल गेट के पास थाना क्षेत्र नैनी से गिरफ्तार किया गया । अभियुक्त उपरोक्त के कब्जे से 200 ग्राम अवैध नशीला पाउडर (डायजापाम) बरामद किया गया ।उक्त गिरफ्तारी/बरामदगी के संबंध में थाना नैनी में मु0अ0सं0 003/2024 धारा 8/21 एनडीपीएस एक्ट पंजीकृत किया गया । नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी । गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-संगम लाल भारतीया पुत्र स्व0 धर्मदेव भारतीया नि0 संजय नगर छिवकी थाना नैनी कमि0 प्रयागराज, उम्र करीब 27 वर्ष ।पंजीकृत अभियोग का विवरण- मु0अ0सं0- 003/2024 धारा 8/21 एनडीपीएस एक्ट थाना नैनी कमिश्नरेट प्रयागराज ।आपराधिक इतिहास-अभियुक्त संगम लाल भारतीया उपरोक्त1.मु0अ0सं0 876/2017 धारा 380/411 भा0द0वि0 थाना नैनी प्रयागराज । 2.मु0अ0सं0 93/2022 धारा 379/411 भा0द0वि0 थाना औद्योगिक क्षेत्र प्रयागराज ।3.मु0अ0सं0 156/2022 धारा 4/5 विस्फोटक पदार्थ अधि0 थाना औद्योगिक क्षेत्र प्रयागराज । बरामदगी का विवरण- 200 ग्राम अवैध नशीला पाउडर (डायजापाम) गिरफ्तारी/बरामदगी करने वाली पुलिस टीम का विवरण-1. उ0नि0 अमित कुमार सिंह चौकी प्रभारी छिवकी थाना नैनी कमिश्नरेट प्रयागराज ।2.का0 संजय कुमार यादव थाना नैनी कमिश्नरेट प्रयागराज ।

माटी कला पुरस्कार योजना के तहत् मण्डल स्तरीय माटीकला पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज।उ0प्र0 माटी कला बोर्ड-प्रयागराज के तत्वावधान में आज दिनॉक-02 जनवरी-2024 को स्थानीय आशीर्वाद गेस्ट हाऊस, जगराम चौराहा-प्रयागराज में मण्डल स्तरीय माटी कला पुरस्कार योजना के तहत् मण्डल स्तरीय माटीकला पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुरस्कार कार्यक्रम में प्रयागराज मण्डल के जनपदों,

प्रयागराज/फतेहपुर/प्रतापगढ़/कौशाम्बी से जो प्रजाप्रति समाज से जुड़े अनेकों मूर्तिकारों/शिल्पकारों द्वारा अपनी-अपनी स्वरचित कला कृतियों के साथ प्रतिभाग किया गया। जिनमें उत्कृष्टता के आधार पर प्रथम/द्वितीय/तृतीय पुरस्कार के रूप में निर्णायक मण्डल श्री रवीन्द्र कुशवाहा प्रवक्ता, डा0 नगीनाराम माडलर, संग्रहालय-प्रयागराज, श्री तलत महमूद, कला विशेषज्ञ, श्रीमती साधना गोस्वामी कला अध्यापक द्वारा चयन किया गया। जिसमें प्रथम पुरस्कार श्री विजय कुमार प्रजापति, द्वितीय पुरस्कार श्री आनन्द राव, तृतीय पुरस्कार श्री सुनील कुमार प्रजापति को प्रदान किया गया जिसमें क्रमशः प्रथम/द्वितीय/तृतीय विजेता को क्रमशः 15000/-12000/-10000/-की धनराशि चेक के माध्यम से तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथी श्री रमाशंकर शुक्ल, पूर्व सदस्य उ0प्र0 खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर जिला/परिक्षेत्रीय ग्रामोद्योग अधिकारी-प्रयागराज द्वारा माटीकला बोर्ड की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुये उपस्थित सभी माटीकला समाज के लोगों से योजनाओं का लाभ उठाने हेतु प्रेरित किया गया। इस अवसर पर श्री राम करन दुंबे, जिला ग्रामोद्योग अधिकारी प्रतापगढ़, श्री अनुज कुमार सिंह, प्रबन्धक जिला ग्रामोद्योग कार्यालय फतेहपुर, श्री सुनील कुमार, मो0 खालिद, मो0 अजहरूद्दीन, श्री अमित कुमार, सुश्री उर्मिला, श्री राजीव शुक्ल, श्री जे0पी0 दिनकर आदि उपस्थित रहें।कार्यक्रम का संचालन श्री राकेश मोहन गुप्ता ज्येष्ठ लेखा परीक्षक परिक्षेत्रीय ग्रामोद्योग कार्यालय प्रयागराज द्वारा किया गया।

पीएम ऑफिस जा रहे कांग्रेसियों की पुलिस से झड़प

प्रयाग दर्पण संवाददाता

वाराणसी। वाराणसी में कांग्रेसियों और पुलिसकर्मियों की झड़प हो गई। मंगलवार दोपहर आईआईटी-बीएचयू गैंगरेप के विरोध में कांग्रेसी पीएम ऑफिस का घेराव करने जा रहे थे। इन्हें रोकने के लिए पुलिसकर्मियों ने 5 जगहों पर बैरिकेडिंग की थी। मगर कांग्रेसियों ने पहली बैरिकेडिंग तोड़ दी। इसके बाद पुलिस ने उनकी घेराबंदी कर दी। पुलिस ने करीब 200 मीटर पहले गुड़गांव चौराहा के पास रोक लिया। इसके बाद कांग्रेस नेता सड़क पर ही बैठ गए। पुलिस के अफसरों से कांग्रेस पदाधिकारियों की तीखी नोक-झोंक और धक्का-मुक्की हुई। हालांकि, पुलिस ने उन्हें आगे नहीं बढ़ने दिया है। इसके बाद सड़क पर बैठकर कांग्रेसियों ने रघुपति राघव राजा राम की स्तुति की। 50 मिनट के बाद कांग्रेसियों ने प्रदर्शन रोक दिया गया। इसके साथ ही पुलिस अफसरों को ज्ञापन सौंपा। इसके बाद सभी लौट गए। यूपी कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने सोमवार को आईआईटी-बीएचयू में गैंगरेप के विरोध में प्रदर्शन का ऐलान किया था।

राय ने यूपी सरकार से पूछा, तीनों भाजपा पदाधिकारियों के घरों पर बुलडोजर कब चलाया जाएगा।घटना 1 नवंबर की रात 1.30 बजे की है। आईआईटी-बीएचयू के हॉस्टल से एक छात्रा किसी जरूरी काम के लिए बाहर निकली। कैंपस के गांधी स्मृति चौराहे के पास उसका दोस्त मिला। तभी रास्ते में कर्मन बाबा मंदिर से करीब 300 मीटर दूर पीछे से एक बुलेट पर सवार तीन लड़के पहुंचे। बाइक खड़ी कर लड़की और उसके दोस्त को रोक लिया।घ्घ् छात्रा का मुंह दबाकर एक कोने में ले गए। वहां बंदूक का डर दिखाकर कपड़े उतरवाए। वीडियो बनाया और फोटो खींची। फिर गैंगरेप किया। छात्रा वहां से भाग कर एक प्रोफेसर के आवास में घुस गई। प्रोफेसर ने छात्रा को गेट तक छोड़ा। उसके बाद पार्लियामेंट सिक्योरिटी कमेटी के राहुल राठौर ने आईआईटी-बीएचयू पेट्रोलिंग गार्ड के पास ले गए। छात्रा ने अपने साथ हुई घटना की जानकारी दी। बताया कि तीनों आरोपियों में से एक मोटा, दूसरा पतला और तीसरा मीडियम हाइट का था। छात्रा के साथ गैंगरेप की जानकारी होने पर कैंपस में हंगामा हो गया। घटना के 60 दिन बाद 30 दिसंबर की रात पुलिस ने आरोपियों को चेकिंग के दौरान पकड़ने की बात कही। आरोपियों की पहचान बृज एन्क्लेव कॉलोनी सुंदरपुर के कुणाल पांडेय, जिवधीपुर बजरडीहा के आनंद उर्फ अभिषेक चौहान और बजरडीहा के सक्षम पटेल के रूप में हुई है। तीनों बीजेपी आईटी सेल से जुड़े हैं। पुलिस ने रविवार शाम को तीनों आरोपियों को मेडिकल कराने के बाद भारी सुरक्षा के बीच कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने तीनों आरोपियों को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। तीनों आरोपियों ने पुलिस को बताया, वारदात के 3 दिन बाद यानी 5 नवंबर को शहर छोड़ दिया था। वे मध्य प्रदेश चले गए थे।

5 महीने की शादी, 3 महीने थानों के चक्कर

पत्नी ने सीएम पोर्टल से लेकर महिला आयोग तक में की शिकायत

प्रयाग दर्पण संवाददाता

आगरा। फेसबुक पर चौटिंग करने के बाद शादी की। पांच महीने बाद ही पति पत्नी को नशीला पदार्थ खिलाकर कमरे में बंद कर चला गया। मोबाइल स्विच ऑफ है। युवती ने सितंबर में पुलिस कमिश्नर के यहां प्रार्थना पत्र दिया। सीएम पोर्टल पर शिकायत की। महिला थाने में भी शिकायत की। महिला आयोग को भी प्रार्थना पत्र दिया। लेकिन रिपोर्ट नहीं लिखी गई। तीन महीने चक्कर काटने के बाद 31 दिसंबर को थाना रकाबगंज में मुकदमा लिखा गया है। रकाबगंज की रहने वाली अनुसूचित जाति की युवती का कहना है कि पिछले साल मई में सेवला जाट निवासी मोहित शर्मा ने फेसबुक पर चौटिंग शुरू की। चौटिंग में ही शादी करने की इच्छा जताई। युवती का कहना है कि उसने इंकार किया क्योंकि दोनों की जाति अलग थी। मोहित ने कहा कि वो अपने परिवार को मना लेगा। दोनों ने 29 मई को कोर्ट मैरिज कर ली। शादी के बाद ससुराल पहुंची, जहां उसे जातिसूचक शब्द के साथ अपमान किया गया। मोहित ने अपना घर छोड़ दिया और दोनों न्यू आगरा में किराए पर रहने लगे। इसी बीच ससुराल वाले दहेज का दबाव बनाने लगे। कहने लगे कि कार और तीन लाख रुपये ला तभी स्वीकार करेंगे। युवती का आरोप है कि दो बार उसके साथ मारपीट भी की गई। पिछले साल 29 सितंबर को मोहित ने नशीला पदार्थ खिलाया। उसके सोने के बाद बाहर से कुंडी लगाकर चला गया। सुबह उसने पड़ोसियों की मदद से कुंडी खुलवाई। मोहित का मोबाइल तभी से स्विच ऑफ है।सितंबर में ही पुलिस कमिश्नर, सीएम पोर्टल पर शिकायत करने के बाद महिला थाने में भी प्रार्थना पत्र दिया। थाना सदर, थाना न्यू आगरा में भी प्रार्थना पत्र दिए। राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं जनजाति, महिला आयोग और मानवाधिकार आयोग को भी प्रार्थना पत्र दिए हैं। युवती अब भी अपने पति के साथ रहना चाहती है।

थाना नवाबगंज पुलिस टीम द्वारा 03 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयागराज।थाना नवाबगंज पर पंजीकृत मु0अ0सं0-563/23 धारा-323/304 भा0द0सं0 से सम्बंधित 03 वांछित अभियुक्त 1. विनोद कुमार पुत्र राम किशोर निवासी पीथीपुर थाना नवाबगंज कमिश्नरेट प्रयागराज 2. सुधांशू गौतम पुत्र विनोद कुमार निवासी पीथीपुर थाना नवाबगंज कमिश्नरेट प्रयागराज 3. दिव्यांशु गौतम पुत्र विनोज कुमार निवासी पीथीपुर थाना नवाबगंज कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना नवाबगंज पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक-02.01.2024 को थाना नवाबगंज क्षेत्रान्तर्गत ग्राम जलालपुर चाँधन उर्फ पीथीपुर के पास से गिरफ्तार कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है ।गिरफ्तार अभियुक्तों का विवरण-1. विनोद कुमार पुत्र राम किशोर निवासी पीथीपुर थाना नवाबगंज कमिश्नरेट प्रयागराज, उम्र करीब 46 वर्ष ।2. सुधांशू गौतम पुत्र विनोद कुमार निवासी पीथीपुर थाना नवाबगंज कमिश्नरेट प्रयागराज, उम्र करीब 22 वर्ष ।3. दिव्यांशु गौतम पुत्र विनोज कुमार निवासी पीथीपुर थाना नवाबगंज कमिश्नरेट प्रयागराज, उम्र करीब 20 वर्ष ।सम्बंधित अभियोग का विवरण- मु0अ0सं0-563/23 धारा-323/304 भा0द0सं0 थाना नवाबगंज कमिश्नरेट प्रयागराज ।

थाना उतरांव पुलिस टीम द्वारा 01 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। थाना उतरांव पर पंजीकृत मु0अ0सं0-299/2019 धारा-379/411/420/468/471 भा0द0सं0 से सम्बंधित वांछित अभियुक्त सतीश यादव पुत्र राजमणी यादव उर्फ पटवारी निवासी ग्राम कटहरा थाना उतरांव कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना उतरांव पुलिस टीम द्वारा दिनांक 01.01.2024 को थाना उतरांव क्षेत्रान्तर्गत दिघौटा पुलिया के पास से 1.1 कि0ग्रा0 अवैध गांजा के साथ गिरफ्तार किया गया । उक्त बरामदगी/गिरफ्तारी के आधार पर थाना उतरांव पर मु0अ0सं0-01/2024 धारा-8/20 NDPS Act पंजीकृत कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है ।गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-सतीश यादव पुत्र राजमणी यादव उर्फ पटवारी निवासी ग्राम कटहरा थाना उतरांव कमिश्नरेट प्रयागराज, उम्र करीब 24 वर्ष ।सम्बंधित/पंजीकृत अभियोग का विवरण-1.मु0अ0सं0-299/2019 धारा-379/411/420/468/471 भा0द0सं0 थाना उतरांव कमिश्नरेट प्रयागराज।2.मु0अ0सं0-01/2024 धारा-8/20 NDPS थाना उतरांव कमिश्नरेट प्रयागराज ।बरामदगी का विवरण- 1.1 कि0ग्रा0 अवैध गांजा ।गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम-1. उ0नि0 इम्तियाज अहमद, थाना उतरांव कमिश्नरेट प्रयागराज ।2. उ0नि0 अनिकेत सिंह, थाना उतरांव कमिश्नरेट प्रयागराज ।3. हे0का0 अमरनाथ यादव, थाना उतरांव कमिश्नरेट प्रयागराज ।4. हे0का0 राजेश यादव, थाना उतरांव कमिश्नरेट प्रयागराज ।

आगरा में कोरोना के मिले दो और केस

आगरा। आगरा में कोरोना के दो नए केस मिले हैं। एक ऑस्ट्रेलिया का है, जो आगरा में सत्संग में शामिल होने आया था। यह ऑस्ट्रेलिया जा चुका है। दूसरा मरीज रेस्टोरेंट में कर्मचारी है। यह निजी अस्पताल में भर्ती है। इन दोनों ने ही हरीपर्वत स्थित निजी लैब में कोरोना की जांच कराई थी। प्राप्त जानकारी के अनुसार आस्ट्रेलिया में रहने वाला 44 साल का व्यक्ति 20 दिसंबर को अपने दो साथियों के साथ आगरा सत्संग में शामिल होने आया था।

ताजमहल या तेजो महालय,कोर्ट में वाद दायर, एएसआई को बनाया गया है प्रतिवादीय अब सुनवाई का इंतजार

प्रयाग दर्पण संवाददाता

आगरा। आगरा में ताजमहल के तेजो महालय होने का विवाद एक बार फिर से कोर्ट में पहुंच गया है। इस बार मथुरा के योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संघ ट्रस्ट और क्षत्रिय शक्तिपीठ विकास ट्रस्ट ने वाद दायर किया है। अधिवक्ता अजय प्रताप सिंह ने सिविल कोर्ट (सीनियर डिवीजन) में वाद प्रस्तुत किया।इसमें भारतीय पुरातत्व विभाग सर्वेक्षण को प्रतिवादी बनाया था। सोमवार को न्यायालय ने सुनवाई के बाद वादी को धारा 80(1) सिविल प्रकिया संहिता नोटिस की कार्यवाही पहले पूरी करने को कहा। आगरा में लंबे समय से ताजमहल को लेकर विवाद चल रहा है। पहले भी कई बार इस मामले में कोर्ट में वाद दायर हो चुके हैं। अब एक बार फिर ताजमहल चर्चा में है। अधिवक्ता अजय प्रताप सिंह ने बताया, प्रतिवादी को नोटिस भेजकर दो महीने की समय सीमा के बाद दोबारा वाद दायर करेंगे। इसके पहले दायर प्रार्थना पत्र में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा महानिदेशक नई दिल्ली, अधीक्षक आगरा सर्किल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग व पर्यटन निदेशालय द्वारा महानिदेशक पर्यटन विभाग उत्तर प्रदेश सरकार को लखनऊ को प्रतिवादी बनाया है।उन्होंने

बताया, बाबर की पुस्तक बाबरनामा में ताजमहल के निर्माण का उल्लेख है। इसमें वर्तमान में ताजमहल में स्थित चारबाग (पैराडाइज गार्डन) गार्डन के निर्माण का उल्लेख चारबाग नाम से उल्लेख है। बाबरनामा में पानी के तंत्र बनाए जाने का उल्लेख है। कुआं बनाए जाने का उल्लेख है। वर्तमान में यह सभी ताजमहल में स्थित हैं।उन्होंने बताया, बाबरनामा में लिखा है कि बाबर को मरने के बाद आरामबाग में दफनाया गया था। जो ताज-ए-महल के विपरीत दिशा में स्थित है। हुमायूंनामा में भी ताज का उल्लेख आता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक माधोस्वरूप वत्स ने वर्ष 1946 के एनशिएंट इंडिया के बुलेटिन में ताजमहल से संबंधित तथ्यों का वर्णन किया है।वर्ष 1905 के आगरा गजेटियर में भी यह कहा गया है कि ताजमहल के शिल्पकार कौन है, यह विवादित तथ्य है। वर्ष 1910 के एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के जर्नल में भी ताजमहल के निर्माण का तथ्य विवादित बताया गया है। अधिवक्ता अजय प्रताप सिंह ने बताया, वाद में ताजमहल को तेजो महालय मंदिर बताया है।

शिव सहस्त्र नाम स्रोत में तेजो नाम भोलेनाथ का है। संस्कृत में महालय का अर्थ मंदिर होता है। विश्वकर्मा प्रकाश में भी तेजोलिंग निर्माण का वर्णन है। वर्ष 1194 के राजा परमारदेव चंदेल बटेश्वर शिलालेख में भी एक फ्टिकरी के समान शिव मंदिर के निर्माण का उल्लेख है। ताजमहल के पश्चिमी ओर यमुना किनारे प्राचीन सिद्धेश्वर महादेव मंदिर है। जो एक स्वयंभू शिवलिंग है और लाल रंग का है। ठीक उसी से सटा एक कुआं है, जिससे होकर पानी ताजमहल तक जाता था।तेजोलिंग एक स्वयंभू शिवलिंग है, जिसका अस्तित्व आदिकाल से है। जिस पर मंदिर का निर्माण राजा परमाल देव चंदेल ने वर्ष 1194 में पूरा किया था। इसका मूल नाम तेजो महालय था जिसका अपभ्रंश ताजमहल है। जिस कारण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने आज तक वैज्ञानिक विधि से ताजमहल के भवन की आयु गणना नहीं की।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य) द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1-ए, बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर, 1269/1073 मां श्री आश्रम, मालवीय नगर, बाबा जी का बाग, प्रयागराज से प्रकाशित। संस्थापक :-स्व0 श्रीकांत शुक्ल उर्फ स्वामी कांतेश्वरानंद भारती काली बाबा ।संपादकः-स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य)। मोबाइल नंबर 9450475366 Email :- prayagdarpan@gmail.com, R.N.I. NO.UPHIN/2014/59804 इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।